



नाम	पेज
श्री पार्श्वनाथ प्रभू का स्तवन	१
श्री शान्तिनाथ प्रभू का स्तवन	२
सीख	५
गीत ( बहनोइ सा प्यारा लागे )	५
गीत ( मांजीया धोया थाल )	६
गीत ( ध्यावो जी ध्यावो महावीर )	७
गीत ( सुनो हमारी बात )	७
गीत ( तोरण आयोवनो )	८
गीत ( बोल्योरे बोल्यो )	८
बधावो	६
पंखी	१०
श्री ( मरणो जाणणो )	११
श्री ( पुरुषों मत करना अभिमान )	१२
श्री भरत महाराज का स्तवन	१२
श्री दसारण भद्र राजा का स्तवन	१४
श्री सीतलनाथजी का स्तवन	१६
श्री कीर्तिध्वज राजर्षि की ढाल	१७
श्री श्रावकरी सज्जाय	२७
श्री सातवारों का स्तवन	२६
उपदेशी फटको	३०
श्री उपदेशी फटको दूजो	३३
श्री चोवीस जिनवर का स्तवन	३५
श्री ऋषभ जिन स्तवन	३६
श्री चोवीस जिनवर की स्तुति	३७
श्री बीस बिहरमान की लावणी	३८
श्री सोले स्वप्ना की लावणी	४०

नाम	पेज
श्री विजया सेठ विजिया सेठानी का स्तवन	४४
श्री रहनेम जी की सत्पाय	४६
श्री महावीर स्वामी की पारणो	४७
श्री वपदेशी स्तवन	५१
श्री पारसनाथ जी का स्तवन	५२
श्री चिन्तामणि पार्ष्वनाथ खोत्रम्	५३
खारवरा	५५
शादुँछ विम्वीहीत	५५
माळिनी	५६
श्री वषसगाहर खोत्र	५६
श्री घंटाकरण खोत्रम्	५८
गायन ( जिन धर्म को जाना नहीं )	५६
प्रेम भजन	६०
छाखी प्रणाम	६०
गायन ( यो हन पावनो रे )	६१
गायन ( मनवा मोह नींद को त्याग )	६२
गायन ( समय के केर से )	६२
गायन ( विषय बड़ा दुखदाई )	६३
गायन ( मुक्त को दूर रखो )	६४
गायन ( सुनलो २ धीर प्रभुओ )	६५
गायन ( करछे २ ए चेतन करनी )	६६
गायन ( सबा मित्र समार में )	६७
गायन ( बल्युग बल थायो )	६८
गायन ( शिआ दे रही )	६६
गायन ( भारत देश में जो कैमी २ हो गई भारी )	७१
गायन ( करछे २ रे बेतन )	७२
गायन ( मानो २ रो प्यारी बहिनो )	७२
गायन ( तजदो तजदो ए प्यारी बहिनो )	७३

[illegible]

नाम	पेज
सहायक भगवान	६८
तिन बागी का आधार	६९
जैनिथो जागो	१००
कर्मवृत्ता	१०१
गायन ( शिखा दे रही जी )	१०२
गायन ( भारत देश में )	१०३
गायन ( बहनों मान लोरी )	१०४
गायन ( वालों शोल जन मुखकारी )	१०५
गायन ( गोरख ईश्वर जी कदावे )	१०६
गायन ( वालों पवित्रत धर्म )	१०८
गायन ( धर्म तुम प्यान शिखा दे )	१०९
गायन ( ऐसी पवित्रता नार )	११०
गायन ( मित्रे पाव उदय कुलधारी नार )	११०
गायन ( कान देवा कर रहना लोर्गी )	१११
गायन ( मैं कर्मो जी पद गयी बालम )	११२
गायन ( बंधा मुनो लो मही )	११३
नाटक रंगम	११३
गायन ( बहनों कला स्वदेशी )	११४
गायन ( भवत लक्ष्मि बन्नी रंगारो )	११४
गायन ( बेटो नू बन्त मुमराल )	११५
गायन ( सीता मन्ना को गेदी में )	११६
कुलधारी नार	११७
१० प्रार्थना	११७
गायन ( बन्धन मय मूल गदे )	११८
गायन ( मानव के बन्धन बन्नी )	११९
दुर्गादुर्गा मन्त्र के कट	११९
दुर्गा के कट	१२०

## શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભૂ કા રતવન

પાર્શ્વ જિનેશ્વર પુરો જાગ્યા, માવત મંગલ હીલ મિલાયા ।  
 જાગ વતરી જિમ મામ જાવીજો, સેવક મન મંછિત પૂરીજો ।  
 વતરી દેશ વળારસી મામ, દુઃખપૂરી જાળો જાગિરામ ।  
 જશ્વસેન રાજા તિહાં રાજો, શૂરમળી મિર તિલકા મિરાજો ।  
 તરુપર મામા હૈં પદરાળો, સુખમળિ રૂપ રંગા રમગાની ।  
 માળાત્ દેવલોકથી આવિ જાગ્યા સ્વપ્ના અતુર્દજા મામા પામા ।  
 મંગલો રાજા કરે વિચારો, પુત્રદોરી સિશુધન પતિ સારો ।  
 પોષ વતરી તમામી દિમ જાગ્યા, છપમ કુમારી મંગલ મામા ।  
 દુઃખ મરેદુઃખ મતોલમ પીતો, પાર્શ્વ કુમાર સુત મામજ સ્ત્રીમો ।  
 દિમ ૧ પાર્શ્વ પાર્શ્વ કુમારો, માત પિતા મામ દરબી જપારો ।  
 જોમન મમ પરળી પ્રશ્નમારી, મામ પ્રજાવતી મિમ સુખવતરી ।  
 તીસ મર્મ સ્થામી શ્રદ્ધે મારો, સુખ મિલશે મન મેં ડહાસો ।  
 તિમ જાવશર જોનતં તિકજાને, સ્થામીજી મર્મી તમા મંદ્યાવી ।  
 જોમ મર્મ જામ જોત મત્રાજી, જાતર સંજમ હીલ મિલારી ।  
 મદિ મંદુલ વિચરે જામ જાળો, ચંત મદિ મેલલ માળો ।  
 હીલ મર્મ મમ દરત પ્રમાળો, મિમ સુન્દર અદિ હંદન જાળો ।  
 અખિત ચિન્તામળી સિશુધન મા સ્થામી,

મામ મંમ જિમ પૂર્ણ વતમી ।

सुखान्त तिमि बंदिन जन्म ब्राम्हण सर भंदिन उभूदेवा भान  
 चंद लगी गर ब्राम्हण भोंदे, जेन नये मृत मन्म सन मोरे  
 इवली जी भाग्य तिमि भंजीर, मेल्म भगी ममज्जमा भी  
 प्रभु सेवक जन्मोन्म वीलावे, मममने मंकर कट कुतः  
 साधि इयाधि प्रभु जाये, जाये सेवरीन दुख दु  
 गलाये भावना मुदि भवली जे सुनवाये,

इवाली जी नभुना मुक्ति मज्जारी  
 जे नर भारी रंदाइ माने, अन्त मदाभिद जन्म तिमि पावे

कहता :-

इस गारये तिमिवा मगल सुख कर,  
 तेषीमलो तिमिवा जग जपे  
 धामा सुनंदन जगज बंदन मायना मन मर गयो,

तिन राउ जवना जंगपुर में दुभाजी आनंद कर  
 कर जोड़ि बलीर तिन ऊं श्री मंत्र में,

मंगल करो भी सप में आनंद करो ॥

— ५ —

## श्री शान्तिनाथ प्रभू का स्तवन

भी शान्ति तिमिरवर ।	नगनां सुख अगार ॥
दृष्टिनाथ पदपण ।	तिरयमेन भूगाल ॥
तमघर पटराणी ।	अभिला रूप रमाल ॥
सुख सेज्या पोढ़या ।	स्वप्न तिया दश अगार

हिये हर्ष धरीने ।  
 गज चाल चलता ।  
 कर कमला जोड़ीने ।  
 स्वामी चवदे स्वप्ना ।  
 फल तेहनो कहिये ।  
 जब मोले राजा ।  
 बल प्राक्कम पूरो ।  
 स्वप्नारी माला ।  
 ए ज्येष्ठ वदि तेरसने ।  
 इन्द्रादिक मिलने ।  
 जोवन में आया ।  
 रूप रंभा सरखी ।  
 ए दिन २ बधाता ।  
 खट खंडज नवनिध ।  
 एक दिन चिन्तवे राजा ।  
 सर्व आरम्भ छोड़ीने ।  
 सुण रतनां राणी ।  
 ए पातां मति काढ़ो ।  
 हियड़ां काँई ओछो ।  
 गज रथ तुरंगा ।  
 छनु मोड़ प्यादल ।  
 बत्तीस सहस्र मुकुटधर ।

जाग्या निण हिज धार ॥  
 आया नरपति पास ॥  
 हंस मुख तणी पात ॥  
 राणी लीधा (दीन ) रात ॥  
 सांभल श्री महाराज ॥  
 पुत्र होसो प्रधान ॥  
 कुल मंडन अवतार ॥  
 राणी निरचय धार ॥  
 जन्मिया श्री शांति कुमार ॥  
 जन्म महोच्छय कीधो ॥  
 परणिया राज कुमार ॥  
 मोली अमृत धार ॥  
 पाम्यां रिद्धि भंडार ॥  
 चवदे रतन उदार ॥  
 ओ संसार असार ॥  
 लेसूं संजम भार ॥  
 मूर्च्छाणी तत्काल ॥  
 काढ़ोनी पात रसाल ॥  
 बली आगम किम थासी ॥  
 धारे लाग्न चोरासी ॥  
 ग्राम छिनानु मोड़ ॥  
 राजा सेवा करे कर जोड़ ॥



सुर सोले सहस्र ।	देवीघर लाग्न पचास ॥
प्रभाते उठके नित्य ।	नित्य प्रणमैं ताम्र ॥
चली चोसठ सहस्र ।	चाटंनि गजगेल ॥
पोले उत्ता राणी ।	रूपज मोहम बेल ॥
कण्ठ कोपल पोले ।	यैनज जेसा जाण ॥
निज राजाभुग्नसे ।	नेत्र मृगाणी नार ॥
एहबी नारिया ने छोड़ो ।	कहोनी कोन विचार ॥
बिन अपराध्यां तजसो ।	तो कुण राखणहार ॥
राजा नी सेज्या ।	तइके तोड़या नेह ॥
ए कह्यो न माने ।	निणने दीजे छेह ॥
सईपनि छोड़ो ।	सोभा नईं इण बात ॥
विल विल तो वीले ।	प्रभुजी कह्यो न जात ॥
राजा उतर आवे ।	सांभल तू पदराणी ॥
सुख भोग भोगता ।	पीछे दुरगत सेनाणी ॥
माताने बंधव बैन भाई दास ।	स्वार्थ रो मेलोजब लगपुरे आस ॥
दीखणा रा बादल ।	क्षण में खेरुं धासी ॥
सजनां रो मेलो ।	बिछड़ीया किम होसी ॥
तिण कारण राणी आदरजो तपसार ।	चरित्र लेईने टाण्या
	आत्म दीप ॥

श्री शान्ति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥  
 श्री शान्ति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥



सुर सोले सहस्र ।	देवीधर लाग्न पचास ॥
प्रभाते उठके नित्य ।	नित्य प्रणमें ताम ॥
बली चोसठ सहस्र ।	चाटंति गजगेल ॥
घोले उत्ता राणी ।	रूपज मोहम बेल ॥
कण्ठ कोयल घोले ।	बैनज जेसा जाण ॥
निज राजासुलासे ।	नेत्र मृगाणी नार ॥
एहवी नारिया ने छोडो ।	कहोनी कोन विचार ॥
बिन अपराधां तजसो ।	तो कुण राखणहार ॥
राजा नी सेंज्या ।	तडुके तोडपा नेह ॥
ए कहयो न माने ।	तिणने दीजे छेह ॥
सईयानि छोडो ।	सोभा नदीं इण पात ॥
पिल पिल तो घोले ।	प्रभुजी कहयो न जात ॥
राजा उतर आये ।	सांभल तू पटराणी ॥
सुख भोग भोगंता ।	पीछे दुरगत सेनाणी ॥
माताने बंधव बैन भाई दास ।	स्वार्थ रो मेलोजय लगपूरे आस ॥
द्वीक्षणा रा बादल ।	क्षण में खेरूं धासी ॥
सजनां रो मेलो ।	मिछड़ीया किम होसी ॥
निण कारण राणी आदरजो तपहार ।	चरित्र छेईने दास्या
	आत्म दोष ॥

श्री शान्ति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥

श्री शान्ति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥

## “सीख”

तर्ज :—जावो जावो ए मेरे साधु रहो गुरु के संग.....

जावो जावो ऐ प्यारी बेटी रहो खुसी के साथ ॥ दिग  
चौदह वर्ष तक घर आंगन में खेली धूम मचाई ।  
आज लाइली एक पलक में तूँ हो गई पराई ॥१॥  
सभी तरह की सही सुसीखत पाली और पढ़ाई ।  
दूर हृदय से होती है तूँ आज हृदय की जाई ॥२॥  
लड़ी लड़ली जिद भी करती यहां तो खट गई मैना ।  
वह है देश विराना वहां पर चतुराई से रहना ॥३॥  
आज विदा करने में तुमको हृदय फटा जाता है ।  
मत रोवो ए बेटी जग का ऐसा ही नाता है ॥४॥  
सासु सुसर और पनि देव की सेवा गृह वजल  
ननद देरानी जेठानी से भगड़ा नहीं मचल ॥५॥  
गृह लक्ष्मी गृह चन्द्रिका घन प्रकाश है  
केवल ‘मुनि’ धर्म जिनवर को भूल कभी —————

## ‘गीत’

तर्ज :—सरोता कहाँ भूल आये ...

यहनोई सा मोहे प्यारा लगने —————

नाम आपका —————

मान नान के परम दुलाने —————

सिद्धि मेरी पर कालो —————

औसर मोसर ग्याह शादिमें मनना खर्च करीजो ॥२॥  
 रंड़ी थोड़ कभी न जाजो बेरया मनी मचाजो ।  
 नाटक जुया सिनेमा छोड़ी वीर ने घ्याजो ॥३॥  
 खेनी करजो गोपाल जी दूध छजोरा रो पीजो ।  
 माँस मदिरा छोड़ पहनोईसा नीति धर्म बिन घरजो ॥४॥  
 धर्म पालजो आयक बनजो जीवन सफल बनाजो ।  
 परमार्थ के खानिर अपना जीवन बली चढ़ाजो ॥५॥  
 ( प्रकाशचन्द्र जैन, देरानोक )

### ‘गीत’

तर्ज :—मांजीया घोया थाल परोसिया भात जी...  
 घोया घोया थाल परोसिया भात जी ॥देरा॥  
 आयो आयो शानी रामजी, अट पट घालो हाथ जी ।  
 बाप थारो खरो सुधारक पतिव्रता हूँ माताजी ॥१॥  
 पढ़िया लिखीया विद्वान हो थे लायक थांकी साथ जी ।  
 उत्तम कुल में जन्म लियो हूँ ऊँची थांकी जातजी ॥२॥  
 येन थांकी सुलक्ष्मी और शानी थांका घाता जी ।  
 जाण कर कर काम जगमें ऊँची लीजो न्यात जी ॥३॥  
 बाल दियाह सुदंदा माँ हूँ घणो पशुंथाई घात जी ।  
 बुद्धाने ग्याहामुं जगमें घणा कुंधारा आन जी ॥४॥  
 मोसर को जीमन आयन मुं बुद्धि सब घट जाती जी ।  
 गंगाके बागोंमुं जगमें अवलता मदन मचाय जी ॥५॥  
 ( संजयाराम हीराचंद देरानोक )

# गीत

पं० २

सज :- आवोरी आवो घन श्याम.....

ध्यावोजी ध्यावो महावीर हो यहनोईसा प्यारे ॥टेर॥

सोदो फाटको थे सप छोड़ो,

प्यारे गुरु से प्रीति जोड़ो,

पीयो जी पीयो ज्ञान भंग      .. हो यहनोई ॥१॥

सिगरेट पीनी हैं दुःख कारी,

जांरा ओगन तो हैं जारी,

छोड़ोजो छोड़ो सिगरेट      ...हो यहनोई ॥२॥

चोपट रमणी नहीं सुहावे,

फालतु टाईम आतो गमावे,

छोड़ो चोपट ने अरु तास      ...हो यहनोई ॥३॥

खोटी संगत छोड़ो यहनोई सा,

संतो की सेवा करजो यहनोई सा,

हो जासी जल्दी बेड़ा पार      ...हो यहनोई ॥४॥

## गीत

सज :- पंखी वावरिया.....

सुनों हमारी बात थे प्यारा यहनोई सा ।

तजो फूट अभिमान थे प्यारा यहनोई सा ॥टेर॥

सुन्दर सुरत मोहन प्यारी मुख चन्द्र की शोभा निराली ।

देखत नैनन धापे थे प्यारा यहनोई सा ॥१॥

मात तात के बिनयी पूरे आन बहिन के हो यङ्गीरे ।

पहिन गले के हार, धे प्यारा बहनोई सा ॥२॥

कुसंगत से बचते रहना, भले जनों की संगत करना ।

यही कुलीन आचार धे प्यारा बहनोई सा ॥३॥

परनारी और घेरया त्यागो, झूठ कपट से दूर भागो ।

करो सरल व्यवहार धे प्यारा बहनोई सा ॥४॥

बहिन हमारी एक लाख की, मान बढ़ोवे आप राज की ।

सया लाल का आप धे प्यारा बहनोई सा ॥५॥

चन्द्र चाँदनी जोड़ी मिली है, प्रेम प्यार की क्यारी मिली है ।

मिलकर करो सुधार धे प्यारा बहनोई सा ॥६॥

चार भुजा का ब्रह्मा होना, दुनियाँ को जो पावन करता ।

आप उन्ही के लाल धे प्यारा बहनोई सा ॥७॥

बहिन हमारी अति ही प्यारी, पीवर छोड़ी हुई तुम लारी ।

रखजो इसका मान धे प्यारा बहनोई सा ॥८॥

## गीत

नोरण आयो बना धर धर काँपे राज ।

नोरण आयो बनो सामुजो ग प्यारो राज ।

मायङ्ग की जागो बनो भुवा गोद खिलायो राज ।

मुख बत्तीसी खिल रही चमके उनीयारो राज ।

विद्या को पंडित बनो गुरु कुल को ब्रह्मचारी राज ।

उभो अमराव बन सर छोड़े री अमचारी राज ।

## गीत

तर्ज :—बोल्यो रे बोल्यो गालियांरी खातिर बोल्यो...

बोल्यो रे बोल्यो गीतां री खातिर बोल्यो,

ज्ञानवाली रा छेल, फूठरो बोल्यो ।

बिद्यावाली रा समय देखने बोल्यो,

अवसर वाली रा, हाँ रे हाँ,

म्हारै देश री सेवक हूँ शुभ गीत सनाऊ हूँ ।

( तोलाराम हीरावत, देशनोक )

## बधावो

तर्ज :—केशरीयालाल कोयल बोले...

मंगल गीतों रो आज गावो बधावो ।

गावो गावो बाबा सारी पोल रंग रसियाराज ॥८॥ गावो...

पहले बधावो राज बिद्यारो आयो ।

आयो आयो गुरुसां री द्वार, गुण रसियाराज ॥९॥ गावो...

दूजो बधावो राज ज्ञान रो आयो ।

आयो २ ज्ञानजी रे द्वार रंग रसिया राज ॥१०॥ गावो

तीजो बधावो राज धर्म रो आयो ।

आयो आयो साधुजी रे द्वार, रङ्ग रसिया राज ॥११॥ गावो...

चोथो बधावो राज विनय रो आयो ।

आयो २ सुसरजी रे द्वार, सुख रसिया राज ॥१२॥ गावो...

पञ्चम बधावो राज धीरज रो आयो ।

आयो २ ज्ञान भण्डार श्री नाथराज, गावो बधावो ॥१३॥

( तोलाराम हीरावत, देशनोक )



## ॥ श्री दसारण भद्रराजा का स्तवन ॥

पथारिया धीरजी नंद भारी, दसारण नगरी के घारी ।  
 मुनीवर चउदा सहस घारी, आरज्यां छतीस हजार ॥  
 दोहा :—समोय सरण देवां रच्यो, सोहे श्री जिनराज  
 इन्द्रा इन्द्राणी सेवा करतां, पावे हरष अगाज ॥  
 धीर जी ने यन्दन कुंआया दसारण भद्र बड़े राया ।

धीर जी ने ॥८॥

धीर जी आप उतरपा यागे लखर राजन्द्र भणी लागे  
 जावणो दरसके काजे । करूं सजाई यह धाजे ॥

दोहा :—हाथी घोड़ा रथ पालग्री पापदल के परवा  
 भाई बंश ऊमराय अँतेयर सबको लीनां लार ।

धीर जी ने ॥९॥

आठारा सहस गजराजे घुड़ला लग्न चौबीस गां  
 इक धीम सहस रथ जोनी पालग्री एक सहस सोती

दोहा :—गज घुमें घुड़ला हँसे रथ नणे भूणकार ।

पापदल मनमुल आगे छेई करता जय जय कार

धीर जी ने ॥१०॥

पाँच मे अँतेयर लारे मो बनाकर कर सिंग गारे ।

पेरीया रतन जड़न गहेणां याजना याजीनर घेणां

दोहा :—चँवर एग हांता अनी चाल्या महँवजार ।

दंभ आटपर आवको राय गरखो मन मुझार ।

धीर जी ने ॥११॥

स्वर्ग सु इन्द्र जो आया, बैठा श्री जीनघर के पाया ।

ज्ञान सुं बात सर्व जानी । दसारण भद्र बड़ो मानी ॥

दोहा :—मान उतारण फारने इन्द्र दियो आदेश ।

ऐरावत ऐसी करे ईको मान गले विशेष ।

वीर जी ने ॥४॥

चौऊँसठ सहस गज छाजे गगन में ऊभाही गाजे ।

एक। एक वरण बजो आयो सुणता अचरज जो पायो ॥

दोहा :—एक एकके मुख पांच से, मुख मुख के आठ दन्त ।

दन्त दन्त आठ घावड़ी में आठ कमल में हैंत ।

वीर जी ने ॥५॥

फाकड़ी लाख जी के । नाटक बतीस बतीस दीखे ।

इन्द्र को इन्द्रासन सोहे, करण का ऊपर मनमोहे ॥

दोहा :—जणीपर इन्द्र वीराजीया लारे सब परिपार ।

दसारण भद्र नरीन्द्र देखने गरम गयो तत कार ।

वीर जी ने ॥६॥

बिचारे नृप मनके मांहीं धड़ाई किस बिध रहे भाई ।

इन्द्र से जीत सकूं नाहीं कहुँ उपाय कडाताई ॥

दोहा :—अवसर ने संजम लियो दसारण भद्र नरीन्द्र ।

तुरत आप उतावला पग लागा शकेन्द्र ।

वीर जी ने ॥७॥

मुनीसु करजोड़ी धोले, नहीं कोई आपतणे तोले ।

और तो शक्ती घणी म्हाँरी । ऐसी नहीं एकण लगारी ॥

## श्री

गुप्तों मत करना अभिमान,

एक दिन निकल जायगा प्राण ।

राज्य की तथा सम्पत्ति दोनों क्षिप्त लक्ष्मी हँदी ।

राम लछमण का लगा झगडा,

बिगड़ गई दुश्मनूँही ॥१॥ गुप्तों... ॥

मान बालक को बँधने मारा,

मम नया मथुरा में ।

शूरा पाळ भेत गया

नव राज सिद्धा चलन में ॥ २॥ गुप्तों ॥

दुर्गोपन का क्या बल देना

बार बार सम राधा ।

भीमसेन की मदा लला १४

नलही ही मद्र धारी : १५ ॥

कर्म धारुत सुना धार १६

बार बार नही पाव मम : की ममान ।

कीरा बिना बिह मद्र : १७ ॥ १८ ॥

॥ श्री भवन महाराज की स्तुति ॥

मम नव मम : १९ ॥ २० ॥

मम नव मम : २१ ॥ २२ ॥

मम नव मम : २३ ॥ २४ ॥

लाख सतोतर पुरवताई कुंवर पदे महाराज ।

पट लाख पुरव राज पदवी भोग विया श्री काज । मुगत ॥२॥

साठ सहस वरसां लगताई दिग चीजे अधिकार ।

अष्ट भगत त्रिदेश अराधी बस कीना सुर भोपाल । मुगत ॥३॥

रतन चतुरदस नवनिध नायक राण्या चौसठ हजार ।

महल बीयालीस भोमी यासरे नाटक नांभणकार । मुगत ॥४॥

दोय सहस देवता किया सरे तन तणां रखवाल ।

लाख-चौरासी रथ ह्य गय वरपायक छन्नुं कोड भूंजार ।

मुगत ॥५॥

आरीसा का भवन में सरें आयो ऊजवल ध्यान ।

अनीत भावना भावतां सरे पाया केवल ज्ञान । मुगत ॥६॥

संजम लेय पधारिया सरे भरी सभाके मांय ।

दस सहस समझाया नृपति ज्ञानपंथ दीखलाय । मुगत ॥७॥

तीजा अङ्गके मांयने सरे चऊ ठाणे अधिकार ।

ऊगी ऊगीने ऊगीया सरे पुन्य तणा फलसार । मुगत ॥८॥

भरत खँडना चक्रवर्त पहेला भरतेश्वर जी नाम ।

ऐसा धनी को ध्यान जो धरता पावे सुख आराम । मुगत ॥९॥

लाख पुरव लग पालियो सरे केवल पद अणगार ।

अणसण कर अष्टा पद ऊपर पहुँचा भवजल पार । मुगत ॥१०॥

ऊगणी सो पेंतालीस वरसे रतन पुरी चौमास ।

हीरालाल कहै पुज प्रसादे पुरो मनकी आस । मुगत ॥११॥

## ‘पंखी’

तज...उत्तर दक्षिण मुं पंखी आई कर पंखीरो मोल  
रे आ पंखी म्हौरी,

उत्तर दक्षिण मुं धरि घेरे आया

धां मुं म्हारि सम्पन्न रे धे सगी म्हौरा ॥टैर

धारे म्हारि घर रो खोणो, बनीयो रहे सम्पन्न रे,  
धे सगी म्हौरा ।

काथो ललित कदे न दूटे, दूटे न मायो नेह रे,  
धे सगी म्हौरा ।

महे धारि आया धे म्हारि आजो कजो मीठी घान रे,  
धे सगी म्हौरा ।

सम्य गुरयो में बोये पाद पाद, गयो कजो कज रे,  
धे सगी म्हौरा ।

सामे सीटा गी : सीगा गयो न कजो आव रे,  
धे सगी म्हौरा ।

बाही गुरयो ११ ११ ११ ११ ११ निवाय रे,  
धे सगी म्हौरा ।

उमरा ११ ११ ११ ११ ११ ११ न गंदा गीन  
१ सगी म्हौरा ।

११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११  
१ सगी म्हौरा ।

आंपा मिलने ज्ञान बढ़ावां, करां सत्य प्रचार रे,  
धे सगी म्हाँरा ।  
( तोलाराम हीरावत )

## श्री

या मनखा मोटी घात मरणो जाणणो  
मरणो मरणो सारा केवे मरे सभी नरनारी रे ।  
मरवापेली जो मरजावे तो बलिहारी रे ॥१॥  
जीवा सु सगलो जगराजीमरणो मन नहीं भावेरे ।  
राजा रंक सरीखो सय रे तो पण आवे रे ॥२॥  
दूजा भूप डरप मलेछा री कीधी तावे दारी रे ।  
वीर प्रातप जाण ने मरणो टेक न टाली रे ॥३॥  
गुरु गोविंद रो यामणा भूषो बालक दो चीणाया रे ।  
भामा साह धणीयोने धन दे जाता लाया रे ॥४॥  
मरवाने वन वीर वीसरीयो धाय याद करलीधो रे ।  
धोरे चूखो यारे साटे जायो जाती की धोरे ॥५॥  
मरवा जो जाणे वीसू पाप करम नहीं होवे रे ।  
सुख दुखरी परवा नहीं राखे प्रभु ने सेवेरे ॥६॥  
मरने जब रामने देणो या जी रे मनमें लागी रे ।  
चतुर चरण घाणरे लागे वो बड़ भागी रे ॥७॥

दोहा :—भन भन बूषहे आपने राख्यो मान अगण्ड,  
 बार बार गुण गायना गुर गया गगन के मंड ।  
 घीर जी ने ॥८॥

गुनी संजम जो पाली पधारिया गुगत भुझारी ।  
 मीठाई जनम नणी कंगी, आत्ममा अलट छुई जेरी ॥

दोहा :—गन्देवां प्रमाद से, गुणजो भविष्यन लोग ।  
 जो करणी मांणी करे, तो मिटे कर्म का रोग ।  
 घीर जी ने ॥९॥

समय उगणी में साल तेजीसे मन मोहे ।  
 असोज गुरु पदमी गुल पाया ।

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दाहा —दम दारीनी मायन राग मादा दाहर ।  
 बरदमाय विना राग रागा म बार संन की लेर ।

॥ श्री मानद नव्यज्ञा का स्तवन ॥

म दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

दण्ड म् हीगलाल गाया ॥

जिनन्द जी काज समों कीजे । नाथ जी । मैं द्वार ॥२॥  
 हाजर रहसु पन्दगी करसूं फिर किम नहीं रीझे ॥जि नन्दजी॥  
 दिल उदार कृतार के लावो । विनती मानीजे ।  
 विनती मानीजे ॥

जिनन्द जी नाथ जी । मैं द्वार ॥३॥  
 मेघ सघन घन वरसत समजन । आशा तृपतीजे ॥जिनन्दजी॥  
 औरारें पास जाचना करता । वान न सोहीजे ॥जिनन्दजी॥  
 नाथ जी । मैं द्वार ॥४॥  
 करुणा सागर करुणानी वाजत, हुक्म कराइजे ॥जिनन्दजी॥  
 मगन कहे प्रभु बाप गल्ला की । ओढ़नी भाई जे ॥  
 ओढ़नी भाई जे । जी नन्दजी । नाथ जी । मैं द्वार ॥५॥

॥ श्री कीर्तिध्वज राजर्षि की ढाल ॥

॥ दोहा ॥

श्री श्री आदि जिनेश्वर, वंश चलावणा भूप ।  
 कुल दीपक प्रभु कुल विप्रे, भर्तज बड़ा अनूप ॥१॥  
 इक्ष्वाकु वंश में ऊपना, भूपति केह असंख्य ।  
 कीर्तिध्वज की वीरता, सुणजो चित्त निशङ्क ॥२॥



## ॥ रस महेलड़ी- ॥

श्री आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ एदेओ ॥

गुनी गुण थापीया मरे कीर्तिवज को पाट ।

आर सवंस से निगारया मरे, मोड़ी कर्म की गाँठ ॥ १ ॥

कीर्तिवज राजा हुआ मुनीश्वर मोट का ।

राजा राज करे कीर्तिवज, मनमें यसे ॥

साज संभार नहीं कर राजकी लगी सं

जिम सूर्य तिम चैतन जज्ज्वल, कर्म-राह तिण लार ।  
भव मांहि देवे वेदना, धिक्क धिक्क यो संसार हो  
की० ॥८॥

मन्त्रीश्वर बुलायने सरे, राज भण्डार संभलाय ।  
तिलक कियो श्री कुवंर ने सरे, राणी दीवी समभाय हो  
की० ॥९॥

अयोध्या नगरी तणो सरे, छोड़ दियो राज ।  
कीर्तिध्वज राजा चल्या सरे, करवा आसन काज हो  
की० ॥१०॥

कमल प्रभा राणी तजी सरे, सो कौशल्य सो पूत ।  
आप हुआ मुनीश्वर मोदका सरे, किया मुक्तिका सुन हो  
की० ॥११॥

संयम लिख्यो भावसुं सरे कीनो उग्र विहार ।  
तपस्या मांढी आकरी सरे, मुनीश्वर गुण भण्डार हो  
की० ॥१२॥

ज्ञान भणी गुरु कने सरे, हुआ पूर्व का धार ।  
आज्ञा मांगी एकला सरे, करे देश में विहार हो  
की० ॥१३॥

दिन किता एक आंतरे सरे, आया उण हीज शहर ।  
मास खमनको पारणो सरे, गों चरियां की बेर हो  
की० ॥१४॥

राणी भरोखे भाकती सरे, बैठी महल मंभार ।  
मुनिवर आंवता सरे, पूर्व घात चितार हो  
की० ॥१५॥

## ॥ रस सहेलड़ी- ॥

श्री आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ एदेशो

शुश्री भूपन धापीया मरे कीर्त्तिध्वज को पाट ।

आर मयंम छे निमरया मरे, सोड़ी कर्म की गांठ हो ॥

कीर्त्तिध्वज राजा हुआ मुनीरवर मोट का टेर ॥१॥

राजा राज करे कीर्त्तिध्वज, मनमें धसे रैराग ।

मार मंमार नहीं करे राजकी लगी मंजम की लाग हं

कीर्त्तिध्वज ॥२॥

मंत्रीग्वर समझावे निजानिज, बिना हुआ मन्तान ।

राजराट हिम चम्पु जिना का घर जिनका जामजान हं

की० ॥३॥

तुम वगसना घर गी गार, गरी काम अजाग ।

हम मृगीन गीन गीनया, जाग दिया मुख मोग हो

की० ॥४॥

पदो घर पदगार मरे न गी नर उभेद

धर उभेद गी का उभेदगना मरे नरी लह कोई भेद

की० ॥५॥

पद लख पद पद न बिना न मार ।

मनकद न मार मरे मार मार गी मून हो

की० ॥६॥

पद पद न मार मरे मार मार गी गगन चरित्र ।

पद पद न मार मरे मार मार गी कर्म की गीन हो

की० ॥७॥

जिम सूर्य तिम चेतन जज्ज्वल, कर्म-राह तिण लार ।  
भव मांहि देवे वेदना, धिक्क धिक्क यो संसार हो  
की० ॥८॥

मन्त्रीश्वर बुलायने सरे, राज भण्डार संभलाय ।  
तिलक कियो श्री कुवर ने सरे, राणी दीवी समभाय हो  
की० ॥९॥

अयोध्या नगरी तणो सरे, छोड़ दियो राज ।  
कीर्तिध्वज राजा चल्या सरे, करवा आसन काज हो  
की० ॥१०॥

कमल प्रभा राणी तजी सरे, सो कौशल्य सो पूत ।  
आप हुआ मुनीश्वर भोटका सरे, किया मुक्तिका सुन हो  
की० ॥११॥

संयम लिख्यो भावसुं सरे कीनो उग्र विहार ।  
तपस्या मांडी आकरी सरे, मुनीश्वर गुण भण्डार हो  
की० ॥१२॥

ज्ञान भणी गुरु कने सरे, हुआ पूर्व का धार ।  
आज्ञा मांगी एकला सरे, करे देश में विहार हो  
की० ॥१३॥

दिन किता एक आंतरे सरे, आया उण हीज शहर ।  
मास खमनको पारणो सरे, गों चरियां की वेर हो  
की० ॥१४॥

राणी भरोखे भाकती सरे, बैठी महल मंभार ।  
मुनिवर आवंता सरे, पूर्व बात चितार हो  
की० ॥१५॥

आगे साधु आयिया सरे, छे गया मुझ भरतार ।  
यो भरतार साधु बण आयो मरे, पुत्र छे जासी तार ।  
की० ॥१६॥

आय गयो पहिला बन योगी, छेवन आयो पूत ।  
जो पूत छे जायसी मरे, किसो रहे घरसुनहो ।  
की० ॥१७॥

यो नहीं आवे जाहर में मरे, सहजे ही दल जाय ।  
भयर पड़े नहीं राज कुंवरन मरे, आगाके नहीं आव ।  
की० ॥१८॥

हलकाग ने हृदय त्रिगो मर, ये साधु अणगार ।  
जायो उगाने यो कह दो जो मर मन रहा जाहर संभार ।  
की० ॥१९॥

हृदय हृद्रा गणी जो केने हलकाग दोष गार ।  
दोह आगे के गगा मृनि का, दबन लगा मार हो ।  
की० ॥२०॥

द दे नडा काट वारन मृनि अमा नशार ।  
गजाने मा लखर नहीं / य मनि क मार हो ।  
की० ॥२१॥

दामो लखर दी हो गजान मृनिवर लाचरी आया ।  
पिता आगे के वारन वार मार मार लाया हो ।  
की० ॥२२॥

लखर हृद्रा गणी मार मार मार मार मार मार ।  
वंदना केने लाचर मार वंदना मृनि के वार हो ।  
की० ॥२३॥

हाट जोड़ के कंवर कहे सरे, क्षमा करो मुनिराज ।  
मने खबर नहीं इस बात की सरे, माताकी यो अकाज हो  
की० ॥२४॥

जन्म जराने मरणा मीटाया, दे मुनिवर उपदेश ।  
वाणी सुन बैरागीया सरे, पेरयो साधुको भेष हो  
की० ॥२५॥

दो कर जोड़ी कहे कंवर जी, सांभल जो मुनिराय ।  
इन संसार में राग द्वेष की, लाग रही ते लाय हो  
की० ॥२६॥

यो संसार समन्द्र भारी, तारो थे मुनिराज ।  
दीक्षा ले गुरु के पग लाग्या, तरण तारण जहाज हो  
की० ॥२७॥

खबर हुई राणी भणी सरे, पुत्र लीनो संयम भार ।  
मोह कर्म की धाकज आई, उठी तनमें भाल हो  
की० ॥२८॥

पति गयो पहिला मने छोड़ी, पुत्र गयो छै आज ।  
धिक धिक मुक्त पापणी सरे, मोझे हयो अकाज हो  
की० ॥२९॥

इम विचार करती राणी महल सेती छिटकी ।  
आरत ध्यान के बशमें होकर, कर्म दुर्गति में पटकी हो  
की० ॥३०॥

हुई यन राजा धर राणी, सिंहणी नाम धरावे ।  
फिर हुई यनमें रहे रंगमें, जीव मारने खावे हो  
की० ॥३१॥

आगे माधु आयिया मरे, छे गया मुक्त भरतार ।  
 गो भरतार माधु वण आगे मरे, पुत्र छे जासी छार ।  
 की० ॥१६॥

आय गयो पहिला वन योगी, लेवन आयो पूत ।  
 जो पूत छे जायसी मरे, किमो रहे घरसुतहो ।  
 की० ॥१७॥

गो नहीं आवे जाहर में सरे, महजे ही टल जाय ।  
 लयर पड़े नहीं राज कुंवरने मरे, आगाके नहीं आव हो ।  
 की० ॥१८॥

हृदयारा ने हृदय द्वियो मरे, ये माधु अणगार ।  
 जायो इणने गो इह दाजो मर मन रहा जाहर संभार ।  
 की० ॥१९॥

हृदय हृदय गार्गी रा केरा हृदयार दोष गार ।  
 दाह आगक गयो मान का दयन लगत मार हो ।  
 की० ॥२०॥

दाह दाह का दाह मर मन लगत मार हो ।  
 दाहने का दाह मर मन लगत मार हो ।  
 की० ॥२१॥

दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह ।  
 दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह ।  
 की० ॥२२॥

दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह ।  
 दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह दाह ।  
 की० ॥२३॥

हाह जोड़ के कंवर कहे सरे, क्षमा करो मुनिराज ।

मने खबर नहीं इस घात की सरे, माताकी गो अकाज हो  
की० ॥२४॥

जन्म जराने मरणा मीटाया, दे मुनिवर उपदेश ।

चाणी सुन बैरागीया सरे, पेरयो साधुको भेष हो  
की० ॥२५॥

दो कर जोड़ी कहे कंवर जी, सांभल जो मुनिराय ।

इन संसार में राग द्वेष की, लाग रही ते लाय हो  
की० ॥२६॥

गो संसार समन्द्र भारी, तारो थे मुनिराज ।

दीक्षा ले गुरु के पग लाग्या, तरण तारण जहाज हो  
की० ॥२७॥

खबर हुई राणी भणी सरे, पुत्र लीनो संघम भार ।

मोह कर्म की धाकज आई, उठी तनमें झाल हो  
की० ॥२८॥

पति गयो पहिला मने छोड़ी, पुत्र गयो छै आज ।

धिक धिक्क मुझ पावणी सरे, मोहो हयो अकाज हो  
की० ॥२९॥

इम विचार करती राणी महल सेती छिटकी ।

आरत ध्यान के वशमें होकर, कर्म दुर्गति में पटकी ॥  
की० ॥३०॥

हुई यन राजा धर राणी, सिंहणी नाम धरावे ।

फिर हुई यनमें रहे रंगमें, जीव मारने खावे हो  
की० ॥३१॥



अब मुनिवर की सुनो धारता, वे गुरु चला दोही ।

મંપમ પાલે દોષજ ઢાલે, જ્ઞાન ગુનાકર મોહી હો

पृ० ॥३२॥

भूमंडल में विहार करता, करता ज्ञान अभ्यास ।

चित्रकोट गढ़ उपरं सरं, आप कियो भीमान हो

की० ॥ ३४॥

माम लामण पारणे मरे, गोत्रगिया सिधाय ।

भीजा प्रहरके पल्लव में मगं, मुनियर मारग जाय हो

ਸ਼ੀ. ੧੩੪੧

ईर्ष्या एवं मोक्षों वरुणों मर, गत हृषी की चाल ।

कोली वातरा आगा मंजर्वा मृनि ममना में लाल ।

की० ॥३५॥

मरा वनम उही वृनज शारण गान विहगम्य ।

॥ अष्टादश त्रय मासक मरु हस्वा मुनिना आह्वान श्री

४१० (३६१)

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

इसका समय १७०० से १७०० ईसवी तक है।

610 113911

सुख भवति . . . . . ॥१॥

इति च । ॥ १ ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

मृन ॥ ३८॥

कहे चेला जी सुणों गुरुजी . एक करुं अरदास ।  
 सारुं कारज आप देखतां करुं कर्म को नाश हो ॥  
 गुरुजी महारा आज्ञा देवो तो आगे चलांसु । टेरा ॥३६॥  
 दो म्हाँनि खरची अमरापद की, जन्म जन्म सुख पाजं ॥  
 सुख सासता सिद्ध पुरी का, गरभावास नहीं आजँ हो  
 ॥ गुरु ॥४०॥

तुं बालक नानडियो म्हाँरो, कोमल काया धारी ।  
 यो परी सोह घणो दोहिलो, मान कहण तू म्हाँरी रे  
 ॥ सुन ॥४१॥

दुखर दुखर घणोज दुखर, तेमां दुखर कारी ।  
 मने सहनदे मान लेस तु घणो परिसह भारी रे  
 ॥ सुन ॥४२॥

या चेला छे दोहिली सरे, रहणो ध्यान अडोल ।  
 संयम पालो सुख में रहो सरे, मानो हमारो धोल रे  
 ॥ सुन ॥४३॥

धे गुरु दाता ज्ञान का सरं, तरण तारण जहाज ।  
 म्हाँरे पैठां आप दुख पावो घनी आये मुक्त लाज हो  
 ॥ गुरु ॥४४॥

हाथ जोड़ने कहे कुंवरजी मैं सरो राजपूत हो ।  
 जन्म लियो घर आप के सरे, सिहनी जायो पूत हो  
 ॥ गुरु ॥४५॥

भानं भानं करने समझायो, चेलो न मानी एक ।  
 सूर क्षत्री रण में चढ़े सरं पावे हर्ष विदोष हो

आलोऽ निंदी निद्राव्य धरने, अणमण कीधो सार ।  
 चाक्या विपनी मामे मुनीवर, गुरु देखे चारं चार हो  
 ॥ गुरु ॥४७॥

उठी पापनी मारी थापकी, कोमल काया हारी ।  
 नाक झल नहीं पागयो मुनीवर, समता चित विचारी  
 ॥ गुरु ॥४८॥

चाद थादने व्यायण लागी, लण्ड लण्ड रूपो शरीर ।  
 नम्रां भाली जय लागी दुष्टया, लोही पड़े जिम नीर हं  
 ॥ गुरु ॥४९॥

क्षयक श्रेणी भया मुनीवर उर, गान जय पागयो ।  
 धार्मिक कम का लय लागे, कवल जामज पागयो हो  
 ॥ गुरु ॥५०॥

हम विर ससन मने, लला कला कम का नाश हो  
 जम जम जोर कला मला, कल धर्मा में याम हो  
 ॥ गुरु ॥५१॥

अन्य व रण का गुरु, लला ॥ ५१ ॥ दलित रण ।  
 ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 की० ॥५०॥

रा मुनि न . ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 नम्र ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 की० ॥५०॥

नम्र ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 नम्र ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 की० ॥५०॥

कहे मुनीश्वर सुणे वाघणी धिक्क थारो जम्मार ।  
पुत्र विणास्यो आज आपणो, सो कौशल्य कँवार हो ॥५५॥

धिक्क २ घणा हो जो, पुत्रर मार्यो ये पापणी ॥५६॥

जिनके कारण महलां सेती, पड़के कीधो काल ।

उन्हीं पुत्र को हाथ से मारी, करवा लागी अहार हो  
धिक्क ॥५६॥

सुणी वचन मुनीश्वर केरा, घट में पड़ियो भर्म ।

वली विचार कियो मन मांही, कोण बोले इम मर्म हो  
धिक्क ॥५७॥

इहाथी बलि अंत समय में, करता तिणावार ।

जातिस्मरण ज्ञान उपनो, जाण्यो सकल विचार हो  
धिक्क ॥५८॥

कीर्तिध्वज राजा था म्हाँरा, सो कौशल्य थो पृत ।

में राणी हुंती राजा की, कमल प्रभा संयुक्त हो  
धिक्क ॥५९॥

मवे छोड़ने संयम लीधो, दुःख मैं पाई भारी ।

पुत्र वियोगे मरणो मांही, कीनो जान खचारी हो  
धिक्क ॥६०॥

छिटक महल से पड़ो मैं हेठे, कर्म तणी गल भारी ।

तिहां थी मूई यहां उपनी, सिंह तणे घर नारी हो  
धिक्क ॥६१॥

बोही पुत्तर पाने पड़ियो, ते मैं मार्यो आज ।

धिक्क २ मैं पापणी सरे, मोटो कियो अकाज रो

धिक्क ॥६२॥

इणी पापसुं कैम छुटसुं, जन्म के नाय ।

पुत्र हत्या में करी हाथसे, लघु यय मुनिगय हो

धिवक्क ॥३३॥

अय जीवणो युक्त नहीं मरे, अणसन करनो मार ।

पाप आलोज्जं पाछला सरे, जिम उनम्भं भवपार हो

धिवक्क ॥३४॥

आत्म ने धिक्कारज देती, गई धन के मांय ।

बढ़ता भाव धरी ने सिद्धणी, दियो संधारों टाय हो

धिवक्क ॥३५॥

दिन किना एक में सीज्यो संवारो, काल समे रुगी व

हुई देवता स्वर्ग आटमे, देव लोक सहमार हो

धिवक्क ॥३६॥

कीर्त्तिभवज गजा गुन पासं, आत्मन न सुवारी ।

पणा जणा पे उपाकार रुगीने जन मागं उज्जाला हो

को० ॥३७॥

अन्न समय अगमण आग गो, पाप्मा केवल जान

अष्ट कर्म को अन्न करोने, हुआ सिद्ध भगवान हो

की० ॥३८॥

हम अनेक हुआ मुनास्वर, एक एक थी अप्रिया ।

कष्ट पड़्यां कायम रहाने दिया मुक्त में उका हो

की० ॥३९॥

गज मुकमाल हुआ मुनास्वर, बरो जोश पर आग ।

मोमल ऊपर कोष न कीयो मुक्त नया महाभाग हो

की० ॥४०॥

पील्या शिष्य पांचसो मुनिका खंधक खाल उतारी ।  
 औरही घना हुआ मुनीश्वर कहुं कहाँ लग जहाँरी हो  
 की० ॥७१॥

गुरु श्री रत्नचन्द्रजी सरे, ज्ञान तणा दातार ।  
 जवाहरलाल जी मोटा मुनीश्वर, गुण तणा भंडार हो  
 की० ॥७२॥

उन्नीसे इकतीस में सरे, उदयपुर चोमास ।  
 हीरालाल यों करे विनति, गुरु चरणका दास हो  
 की० ॥७३॥

कीर्त्तिध्वज तो कौशल्य मुनिकी, ढाल करी एक मन हो ।  
 कीर्त्तिध्वज राजा हुआ मुनीश्वर मोटका ॥७४॥

इति —

## ॥ श्री श्रावकरी सञ्भाय ॥

श्रावक तुं उठे परमान. चार घडी ले पाछली रात ॥  
 मन में समरे श्री नवकार, ज्युं पामे भवसागर पार ॥१॥  
 कवण देश कवण गुरु धरम कवण हमारे छे कुल करम ॥  
 कवण हमारं छे विन साथ एहवो चिंतयजे मनमाय ॥२॥  
 सामायिक लेजे मन सुध, धरम तणी हिये धरिजे बुध ॥  
 प्रतिकमणो कर रहे नितनो, पातीक आलोये आपणो ॥३॥  
 काया सगति करे पचखाण, सुधी पाळे जिनवर नी आण ॥  
 भणजे गुणजे स्तवन सजाय, जिणहंती नित्तारो धाय ॥४॥

बितारे निज बधदे नेम, पालेजीव दया ते सीम ॥  
 गुरुने मुल लिजे आलही धरम न मेले एका घड़ी ॥४  
 यारु सुध करजे दयापार, आच्छा अधिक रो परिहार ॥  
 मनमरे कड़ो कहेनी साम्य कड़ा ॥ सरुधन मन भाप  
 परमाते उठ गुरु बाँदणजाय, सुणो बन्नाण मद्रासुधे चिन्ता  
 निर दूषण मूजमो आहर, भावुने देजे सुविचार ॥  
 सामी बछल करजे मणो, मग पण मोटो सामीनणो ॥  
 दुःखीया हीना देख, करजे ताम दया सुविचार ॥  
 घर अनुसारा दिजे दान, मोरामुं मनकरे अभिमान ॥  
 अनन्य काय कहिये यलीम, अभक्षया बीसे बीजया बीस  
 केयलिया बाल्या छे इमे, काया कबला कल मन जीमें  
 छाणा इंधण जग्गे जोग जोगा विना मे पापज होय ॥१  
 पावन नी पर पावते नोर अणमल नीमन भोवे भीर ॥  
 बार व्रत मुधा बालते अनिचार मगला दारज ॥१  
 कहया वनरे करमा दान पावनणा गरिहरजे लाण ॥  
 रात्रि मोजन ना बहु दाय जाणान करजे संतोष ॥१  
 मारु मारी लांजन गुर्दी, मारु बाहड़ी मनयेने वाली ॥  
 बहन मन दगाय राग हाल पाव गणा कहया के नाम ॥  
 वाना मलजे वे वे बार अनमल वरना होय अपार ॥  
 जीवानी मा करजे जगज गानिक दार्ली करजे पुण्य ॥१  
 ब्रह्मविन मृष द्विये गमजे, बाल विनारी ने बालजे ॥  
 डलम राम वरन विल, पर दयापार करे सुमचि ॥१

तेल तकर घृत दुधने दही. जघाड़ा मत मेलेसही ॥  
 पांचे तिथ न कर आरम्भ पाळे शील तजे मनदर्भ ॥१६॥  
 दिवस तनो आलोक्य पाप, जिम मंगि सगलो संताप ॥  
 आठू करम पातला, भव भव ना भाजे आमला ॥१७॥  
 बारू लहिये अमर विमाण, जिम पाओ शिवपुरनो धन ॥  
 किरत हरप कहे सनेह, आवकनी करणी वे एह ॥१८॥

## ॥ श्री सातवारों का स्तवन ॥

अदीतवार ने दिन भोली दुनिया, मिनख जमारो पायजी ।  
 छव कायारा आरम्भ करता, गयो जमारो हारजी ॥  
 सुणो भवियण महावीरजी री वाणी,

सत पुरपारी अमृत वाणी ॥१॥

सोमवार ने सुता मूरख, मनमतवाली निंदजी ।  
 काल सीराणे आण खडो, जिम तोरण आयो वीदजी ॥

सुणो० ॥२॥

मंगलवार ने मंगलाचार, दया धरम सुप्रेमजी ।  
 सामायक पाधिकमणो करतां, लाहो व्यो नित नेमजी ॥

सुणो० ॥३॥

बुधवार ने बली अवस्था, बुदापो दुःख दायजी ।  
 बैठे खाट पोलके उपरे, पडियो करे विलापजी ॥

सुणो० ॥४॥



विमलमयार ने विमोज पहियो, कोई न भेटण हारजी  
माग पिनारी करो बंदगी, जिम उनरो भवपार जी ॥

सुणो० ॥५॥

मुकवार ने मुकाचार, जाम्मी जिवपुर माय जी  
अनन्त मुलामे ऐरो दिपा, उपारो होजाम्मी मोचो पार

सुणो० ॥६॥

भायरधार ने थिरचा हाम्मी, हुं धनवंनी नार जी ।

सर सर मोनो पेरनी मोत्या भरनी माल जी ॥

सुणो० ॥७॥

ए मानुवार मडा मिमरीज आ सग दुः की मिमरी

ए मानुवार निन निन मिमरिया दूजनी खेचो पार

सुणो० ॥८॥

## ॥ उपदेशी कटफा ॥

विमलमयार ने विमोज पहियो, कोई न भेटण हारजी

माग पिनारी करो बंदगी, जिम उनरो भवपार जी ॥५॥

मुकवार ने मुकाचार, जाम्मी जिवपुर माय जी

अनन्त मुलामे ऐरो दिपा, उपारो होजाम्मी मोचो पार

भायरधार ने थिरचा हाम्मी, हुं धनवंनी नार जी ।

सर सर मोनो पेरनी मोत्या भरनी माल जी ॥७॥

ए मानुवार मडा मिमरीज आ सग दुः की मिमरी

ए मानुवार निन निन मिमरिया दूजनी खेचो पार

टप्पा का ख्याल राग आनुरागे,  
 धक्का खाय तो ही धसे आगे ॥ धि० ॥५॥  
 नाटकमें उभा रहे रात सारी,  
 मुनि दर्शन आलस अति भारी ॥ धि० ॥६॥  
 तप जप घात में पट नट जावे,  
 खाणे में लोटो लेई भट जावे ॥ धि० ॥७॥  
 स्तवन सहाय कहेंतां शरमावे,  
 लड़ना तो कहुदाय न जावे ॥ धि० ॥८॥  
 दान देतां धर धर कर धुजे,  
 हिंसा करण में कर अति जूझे ॥ धि० ॥९॥  
 लोभ कारण करेअति नर नाई,  
 साहधर्मी तुं करे गुनराई ॥ धि० ॥१०॥  
 पाप करणी में मन उल सावे,  
 धर्म क्रियामें न चिन लगावे ॥ धि० ॥११॥  
 क्रोध मान तृष्णा बल भारी,  
 दान जीयल तप भाव भिखारी ॥ धि० ॥१२॥  
 पाप करण में जोर जणावे,  
 धर्म उद्यम मांहि कायर धावे ॥ धि० ॥१३॥  
 परब्र नहीं देव गुरु धर्म केरी,  
 विणज में दृष्टि पहोचावे घणेरी ॥ धि० ॥१४॥  
 जीव दधाने खरना रोवे,  
 जस्त सोना में निर्यक धन खोवे ॥ धि० ॥१५॥

निंदा विकथा में निशि दिन रातो,  
 गुणि जनका गुण सुणी अकुलानो ॥ धि० ॥१६॥  
 कर्म मन्थन की शिख सुनिगजी,  
 धर्म शिक्षा सुणि अधिक नराजी ॥ धि० ॥१७॥  
 पापी कुं आदर देकें बिठाये,  
 धर्मीकुं देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥१८॥  
 पाप को परचो दया थकी दूरो.  
 धर्म में पाछो कर्म माहीं शुरो ॥ धि० ॥१९॥  
 पर दुःख देवीने अनि हरपाये,  
 निज मपत्त से अधिक पोमाये ॥ धि० ॥२०॥  
 पबुल थोय आम फल चहाये,  
 विष भक्षण करि जीवणा चहाये ॥ धि० ॥२१॥  
 पच पच स्वाय दियो भव मारो,  
 मेलका धैलज्युं हाग्यो जमारो ॥ धि० ॥२२॥  
 निश दिन हाय हाय धन धन की,  
 लाज नहि परभव गुरु जन की ॥ धि० ॥२३॥  
 घोड़ी का खान ज्युं कहे धन मंगे,  
 मोचे न छेवट नरक मे हंगे ॥ धि० ॥२४॥  
 यहाँ अपयश आगे दुःख भारी,  
 धर्म बिना भव भवमें खुवारी ॥ धि० ॥२५॥  
 जंमा जापा नंमा मिधापा,  
 धिक जननी जिणो गोद मिलाया ॥ धि० ॥२६॥

उगणिशें अटतिस महावदि जाणो,  
 बोध तिथि रविधार चन्नाणो ॥ धि० ॥२७॥  
 निलोक रिख कहे अवाल कोही मांदि,  
 हम सुनि करजो धे कर्म कभई ॥ धि० ॥२८॥

## ॥ श्री उपदेशी फटको दुजो ॥

धनतेरा जीवटा, नित करता धरम कुं ॥  
 धन तेरा तन मन, धनहें जनम कुं ॥१॥  
 रत्न चिन्ता मणि नरभव पाई,  
 धर्म चिन्ता मणि ले उलसाई ॥२॥  
 मिथ्यात्वी नरकुं नहिं सरसावे,  
 धर्मी कुं देख अधिक हरपावे ॥३॥  
 धर्म कथा सुनवा चित चहावे,  
 सुण कर सारग्रही उलसावे ॥४॥  
 नप जप किरियामें रहे अगवानी,  
 पुदगल पर कपटें ममता न आणी ॥५॥  
 ख्याल नाटक में कवहुं न जावे,  
 मुनिदरशण आलस नाहि आवे ॥६॥  
 प्रभु गुण गावता अधिक गुंजावे,  
 क्रोध कलेश धकी शरमावे ॥७॥  
 दान देवे नित उलट परिणामें,

पापका काम में इर अनि आणो,

धर्म को काम सदा भलो जाणो ॥६॥

क्रोध मान तृष्णा बल त्यागे,

दान शीघ्र तप भावमें आगे ॥१०॥

सत्य पक्षकी प्रतीति जो आणो,

भूठ को पक्षरति नहीं टाणे ॥११॥

जीव दया धन स्वरचण जाणो,

लाभ अनंत दिये इम ठाणो ॥१२॥

न करे निन्दा विकथा सुणे नाई,

गुणि जननी गुण सुणि उलासाई ॥१३॥

कर्म पन्धन की शोक न धारं,

धर्म शिक्षा सुखरायी विचारं ॥१४॥

पापीसुं प्रीति न राखे कदाई,

धर्मी कुं आदर दे अधिकारी ॥१५॥

धरम सुं परचो पाप भी दूरो,

कर्म में पाछो मो तप जप सरो ॥१६॥

पर दुःख देखि अणुरुप्पा घंगरी,

मगरूरी करे नहीं निज मुख केरी ॥१७॥

नाम को योग आम फल चाहवें,

तमें गुणामो रुदिन ठगावें ॥१८॥

रति दिन बहना धर्म मरम की,

लाज घणी परमव गुरु जनकी ॥१९॥

धन कुटुम्ब तन नहीं जाणे मेरो,

जाणे जैन धर्म सहायक तेरो ॥२०॥

इन भव शोभा आगे सुख भारी,

कर्म शत्रु हणीवरे शिवनारी ॥२१॥

नरभव पाय के धर्म कमाया,

धनजननी जिणे गोद खिलाया ॥२२॥

निलोकरिख कहे उपदेशो,

इम सुणि कर जो थे धर्म हमेशो ॥२३॥

—०—

॥ श्री चौविश जिनवर का स्तवन ॥

प्रातः उठी चोविश जिनवर को

समरण कीजे भाव धरी ॥प्रा०॥

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन,

सुमति कुमति सम दूर हरी ॥

पद्म सुपास चन्द्रा प्रभु ध्यायो,

पुष्प दंत हणया कर्म अरि ॥प्रा० १॥

शीतल जिन श्रेयांस वासु पूज्य,

निर्मल विमल बुद्धि देतग्वरी ॥

अनंत धर्म श्री शान्ति जिनेश्वर,

हरियो रोग असाध्य मरी ॥प्रा० २॥

कुंभु अरह महि मुनि सुव्रतजी,

नमी नेमि शिव रमणी चरी ॥

पारस नाथ वर्द्धमान जिनेश्वर,

केवल लह्यो भव आवे तरी ॥ प्रा० ३ ॥

तुम सम नहि कोई सारक दूजो,

इम निरचे मन माहि घरी ॥

तिलोक रिग्व कहे जिम तिम करिने,

मुक्त लीघ्यो प्रभु महर करी ॥ प्रा० ४ ॥

## ॥ श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ॥ ए देवी ॥

जो जिणंद्र जै जिणंद्र जै जिणंद्र देवा, उठि प्रभान समरनाथ,

श्री ऋषभ देवा ॥ १ ॥

पिता तेरो नामि राज, जननी हं मरुदेवा ।

देही कचन वृषभ लंछन, तेजो रनिपनि जेहवा ॥ जी० १ ॥

जुगलाधर्म निवार कियो प्रभु, छे कुल गरकी डेवा ॥

सजम लीगो श्री जिन नावे कर्म अरि ने हणेंवा ॥ जी० २ ॥

केवल छे प्रभु देवना दीधो, बाणी उगुं अमृत मेवा ॥

चार तीरथकी स्थापना कीनी, अवजल पार करेवा ॥ जी० ३ ॥

दस महस्य मुनि मगे अष्टापद, चढीया अणमण लेवा ॥

छ दिन संधारं मुक्ति विराज्या, सुखि अनन्त नितमेवा ॥ जी० ४ ॥

निलोकगिय कहें में तुम चाकर, हू चरणारज खेवा ॥

जिम निम करि भवमार उतारो, दिजो अविचल रेवा ॥ जी० ५ ॥

## ॥ श्री चोविस जिनवर की स्तुति ॥

राग बसन्त ॥ शांति चरणकी गाउं बलिहारी ॥ श्लो० ॥ ए देशी ॥

भैलो घंढणा नाथ हमारी, तुमारे चरण की बलिहारी ॥

॥ ए देशी ॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुखकारी ॥

श्री सुपार्व चंद्रा प्रभु समरो, जगनायक जस धारी ।

प्रभु जी पूरण उपगारी ॥ श्लो० १ ॥

सुविधि शीतल श्रेयांस वासु पूज्य,

विमल अनन्त धर्मधारी ॥

शांति जिनन्द सुखकंद जगतमें, मेट दीनी सयमारी,

हरो मेरी विपत विमारी ॥ श्लो० २ ॥

कुंभु अर महि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी सुविचारी ॥

तोरण सें पाछा किर आया, वो छोड़के राजदुलारी.

नाथ तुम करुणा भडारी ॥ श्लो० ३ ॥

घे वारस के वारस पारस, पच परमेष्टी उचारी ॥

नागनागणि जलत बचाया, कीना सुर अवतारी,

महिमा जगमें अति धारी ॥ श्लो० ४ ॥

शासन नायक वीर जिनेश्वर, हृद क्षमा प्रभु धारी ॥

फेवल ले प्रभु धर्म बतायो, सुध चरित्र सारी,

तीरथ थाण्यां प्रभुचारी ॥ श्लो० ५ ॥

अणसण लेई प्रभु जोग त्याग कर, पहुँचाई मुक्ति मंभारी ॥



अनन्त सुख मांही जाय विराज्या तो, नरिंजन नीताका  
रखा लोका लोक निहारी ॥ श्लो० ६ ॥

मोह माया मांही उलझ रह्यो में, पायो हूं दुःख अपारी  
तुम शरण बिन चउगति भटक्यो, धर्म की बुद्धि बिसा  
शीख सतगुरु की न धारी ॥ श्लो० ७ ॥

अशुभ कर्म कष्ट दूर भयासु, घाणी लगी प्रभुप्यारी ॥  
आत्म उद्धारण विरुद्ध सुणिने, शरणो लियो सुबिचारी  
सार करजो प्रभु हमारी ॥ श्लो० ८ ॥

सुख सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ।  
जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिझवारी,  
अरज लीजो अवधारी ॥ श्लो० ९ ॥

उगनीसे अडतीश माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथी शनिवा  
देश दक्षिण आवल कोटि पठेमें जोड़ करी हितकारी,  
तिलोक रिझ कहे सुबिचारी ॥ श्लो० १० ॥

॥ श्री वीस विहर मानकी लावणी ॥

दीन दयाल कृपाल, करुणा भण्डारी ॥ क० ॥

जय विहर मान जिनवीश, धर्म अधिकारी ॥

श्री सी मंघर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स० ॥

जय युग्मंघर जसवंत, चरण बलिहारी ॥

चाहु जिणंद कृपाल, करुणा भण्डारी ॥ क० ॥

श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥  
 सुजान प्रभु घनधाती, कर्म कीयां छारी ॥ क० ॥  
 स्वयं प्रभु वीतराग, ममता विडारी ॥  
 ऋषभानन्द आनन्द, करे नर नारी ॥ क० ॥  
 जय विहरमान महाराज, धर्म अधिकारी ॥ ए ढेर ॥१॥  
 अनन्त वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥  
 श्री सूर प्रभु सुखिष्ठात, करो सुख शाता ॥  
 विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजगकु घाता ॥ त्रि० ॥  
 श्री वजरंग धर नव वज्र कर्न के घाता ॥  
 चन्द्रानव सुखकंद दर्श चिन चाता ॥ द० ॥  
 चन्द्रबाहु कमराहु, हठा या खाता ॥  
 कियो कर्म सें जंग भुजंग प्रभु भारी ॥ भु० ज० ॥२॥  
 ईश्वर त्रिजग ईश. मेरे मन भावे ॥ मे० ॥  
 श्री नेमीश्वर जिन ध्यान करतां दुःख जावे ॥  
 वीरसेन करे केण अमर पद पावे ।  
 महाभद्र करे भद्र विघन कुँ हटावे ॥  
 देव जखा करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥  
 अजीत वीरज निजपद. देत भज भावे ॥  
 जघन्य पदे वर्नमान, जिनद उपगारी ॥ जि० ज० ॥३॥  
 मनुष्य पांचरों प्रमाण, प्रभुजी की काया ॥ प्र० ॥  
 लक्ष चोराशी पूरव आपु फरमाया ॥  
 धाप्या हे तीरथ चार भविक मनभाया ॥ भ० ॥

होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥

मै अधम उद्धारण विद्द, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥

निलोक रिम गुं जाण, शरणागत आया ।

जिम निम करो भवपार, अरज अयधारी ॥ अ० ज० ॥४॥



## ॥ श्री सोले स्वप्ना की लावणी ॥

दोहा—शामन नायक सुरतल, भयभंजन भयघंत ॥

प्रियलानन्द जिनंद सम, प्रणमूं मन धरिणंत ॥१॥

बली प्रणमूं गीतम गुरु नय गंजम दातार ॥

नाम प्रसादं वर्णवुं सुपन सोले अधिकार ॥२॥

पाहलिपूर नगरि विषं अन्तगुम गतिंद ।

बार ग्रन धारक गुणों, परजा न गुण कन्त ॥३॥

अउठ पुरव जान गृह अट्ठाह मुनिगज ॥

समो मर्या उदयानमं, भाग्य नरण जिहाज ॥४॥

गामी पामाने विष देण्यां स्थपना माल ॥

पछे नय करजोड़िने, अर्थ कष्टो मुनिबोल ॥५॥

अगहदम अगहदम बाजे बायाडा ॥ ७ देडी ॥

कायकुश की शान्ता दृष्टी, अर्थ गुणों इन स्थलों का) ॥

अवर्ण राजा हायना काटं गंजम यो नहीं छेनेका ॥

दुजे अम्य भया गुरे अकाले, नंदसुणों अय इमका मही ॥

पयमं आर जन्म रिग्या हे, उनहुं केवल जान नहीं ॥

अर्थ मनपरजय अर्थवि पुरण, ७ अन्यकार भया भारी ॥

भद्रबाहु मुनि कहे भूपसुं, पांचमो आरो दुःखकारी ॥१॥  
 चांद देखा तुम चालणी जैसा, तिसरं सपना के माई ॥  
 अलग अलग समचारी होयगी, बोल करक कुल दरमाई ॥  
 भूत भूतणी नाचत हिल मिल, देखा चौथे सुपना माई ॥  
 देव गुरु धर्म छोटा जिनकुं, लोक मानेगा अधिकाई ॥  
 दया धर्मपर बहोत जलेंगे थोड़े जैन धरम धारी ॥भ०॥२॥  
 पांचमें देखा सर्प भयंकर, चारें फणकर फूंकारे ॥  
 कितेक साल पिछे काल पड़ेगा, चारें वरस लग भयंकारे ॥  
 उत्तम साधु कर संधारा, आत्म कारज सारेंगा ॥  
 कायर साधु सो ढीले पड़ेंगे, हिंसा धर्म बिस्तारेंगा ॥  
 छोटा दे उपदेश लोकोकु, होवेगा कोई घरबारी ॥भ०॥३॥  
 छटे स्वप्ने देव विमाणकुं, आता सो देखा फिरता ॥  
 जिसका अर्थ सुजो तुम राजिद दिल अन्दर आणी थिरता ॥  
 जंघा चारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥  
 ए दो लब्धि के हैं धारक, ऐसे मुनिवर की हाणो ॥  
 चैक्रिय और अहारिक की लब्धि, एही बिच्छेदेगा सारी  
 ॥भ०॥४॥

बिकसा कमल उक्तरडी ऊपर, जिसका भेद सुनो भाई ॥  
 चारवर्ण में महाजन के घर धरम रहेगा अधिकाई ॥  
 सास्तर की रुचि रहेगी थोड़ी, सुणतां निद्रा लेवेगा ॥  
 स्तवन सज्जाय और ढाल चौपाई, जिसमें बहुत खुश रहेगा ॥  
 प्रति बोध पिण इसमें पाके, होवेगा संयम धारी ॥भ०॥५॥

आग्या का चमत्कार आठमें, भेद सुनो इसका नीका  
उद्योत होयगा जैन धरम का, चाकी मिथ्यातम है फीः  
समुदर सूको तीन दिशापर दक्षिण दिश डोलो पार्ण  
दक्षिण दिशापर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगी हार्ण  
पंच कल्याणिक भये जिणा पुरमें, धरम हानि जहाँ उ

॥भ०॥६॥

दशमें सोनेकी धाली जिममें कुत्ता देखो खीर खाता ।  
उत्तम कुलकी बोलत है मो जावेगी मध्यम हाता ॥  
नटखट सोदा चोर ठगारा, धरम होयगा धन चाला ॥  
साहुकार सो भूंगेगा दिलमें, कहे न शके मनकी ज्यात  
धन संपन सज्जन की हाणी, सन्ध्यादी कम नर ना

॥भ०॥७॥

हस्ती ऊपर इग्यारमें स्वरने, देखा बंदर कु बैठा ॥  
नीच राजा मो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेः  
घारमे स्वरने देखा तुमने, दरि ने मरजादा छोड़ी ।।  
बेटा बेटी मान गिना ही मरजादा रखे धोड़ी ॥

बहु सामु का न करेगी करेगा उल्टी दुःख देखी भा

॥भ०॥८॥

लांच ग्राही मो भ्रष्टी होयगा, बचन देके नट जावेगा  
दगादार विश्वास चानि नर , सच्चे नरकुं हटावेगा ।  
भला मकम का आदर कमनी, पापी आदर पावेगा ।  
गुरु गुराणी की चेन्दा चेन्दी, सेवा भक्ति कम चहावेगा ।

आपनी पढ़ाई करेगा मुझसे, बुझुं होयगा दुःख कारी

॥भ०॥६॥

जो न्या देवी स्वपने तेरमें, यादरु के महारथ मांती ॥

नादान उमरके धरम करेगा, संजम लेगा उल्लाई ॥

लज्जामुं तप संजम पाली, तपजप में गिन देवेगा ॥

बुढ़ा थिठा होयगा धर्म में आलस अधिको रहेवेगा ॥

सरखा नहि सष लड़का बुढ़ा, समुचय भाव कया जहारी

॥भ०॥१०॥

रत्न की कांनि मंदी देवी चउदमा स्वपनामें जाणो ॥

भरत क्षेत्र का संत साधके, हेत इकलास थोढो मानो ॥

घोषी फलेशी अरु अभिमानी, अपनी यात जमावेगा ॥

भली सीख जो देगा कोई, उसका औगुण घनावेगा ॥

अल्प होयगा संजमयंता, होयगा बहुतसा लिंगधारी

॥भ०॥११॥

राज कुंवर सो चक्ष्या पोठिपर, देखा स्वपने पंदरमें ॥

राजा जैन धरम तजदेगा, राखेगा मिथ्या करमें ॥

पातकरे जो सच्च बटकी उसकी थोड़ा मानेगा ॥

भूट की परतीत करेगा, खोटे का पक्ष तानेगा ॥

धर्मी पुरुष की करेगा ठठा, पापी का आदर भारी

॥भ०॥१२॥

लइते हस्ती देखे सोलमे, विन मानव आपस मांदि ॥

चार चार दुष्काल पड़ेगा, मन चहाया चपेंगा नाहि ॥

मात पित गुरु धर्मके करतां, बिच बिच बात करेगा बेदा  
भाई भाई में संपन ओछी, पोलेगा निर्धक छोटा ॥

पिता पक्ष को आदर ओछो, ब्रिया पक्ष सुं करेगा पार

॥भ०॥१३॥

काया दावला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन धोड़ा होवेगा  
भगड़ा टंटा निर्धक करके, राज मारिं धन खोवेगा ॥

केण न माने भला मरम को, फिर पीछे पछतावेगा ।

एक बिना हजार घरम लग राजिन्द, ऐसा रीति करजावेगा  
अरध सुणी सोछे स्वपना, राज भया दड़ बनधारी

॥भ०॥१४॥

संमन उगणीछों साल सेनीसका, कागज यदि डग्यास ३  
पिटाक रिव्व करे मयन लावणी, गाम कदामें घणाई ।

बांयम आगे दुलम नामें द लक्ष हे दुणमें अधिकाई ॥

बरम न्यान और समना गलं, उनके मुख समजो भाई  
पसी जानके हाता मृकुर, उनगंगे बयजल पारी ॥ १५

— — —

॥ श्री विजयसेठ विजिया सेठाना का स्तवन

मुकल पत्र विजिया वन दीने ॥

सेठ कृष्ण पदम जानी ॥

वनवन श्रावण उग्र प्रभावक विजय सेठने सेठानी ॥

शिवः ना शर विगसार मती ननु,

काम घटा जिम उल्लाणी ॥

सज मिणगार गद्दी पिठ मंदिर हेज घणो हिय हरपाणी

॥ ५० ॥ १ ॥

तीन दिवस मुजब्रन नणा ऐ, सेठ पोले मधुरी नाणी ॥

यवन मुणी नेणा नीर डलीयो पदन कमल गयो बिलगानी

॥ ५० ॥ २ ॥

पूछे प्रीतम सुन सुख ऐणी, कुण चिंता मनमें आणी ॥

शुद्ध पञ्च गुण सुख बन लीनो तुमे परणो बीजी नाणी

॥ ५० ॥ ३ ॥

अवर नार सुभ. बहान बराबर, धन धीरज धांरि जाणी ॥

एकज सेज्या हेज अपर पल, नो पिण मन राग्यो नाणी

॥ ५० ॥ ४ ॥

वर्षा काल बीजन घन गाजे, चउधारा वरसे पाणी ॥

खट प्रभु वरस द्वादश निरमल, शील पालयो जो

समता आणी ॥ ५० ॥ ५ ॥

चिमल केवली करी प्रसांसा, ए दोनु उत्तम शाना

खबर हुई संजम व्रत लीनो, मोह कर्म कीया भुलशानी

॥ ५० ॥ ६ ॥

पुज गुमान चंद्रजी गुरु मिलया, सेठ कथा ज्यां सुख आणी

रिख रत्नचन्द्र जी पाय वन्दे, केवल छे गया निर बाणी

॥ ५० ॥ ७ ॥



## ॥ श्री रहनेमी जी की सझाय ॥

देखी देवर को मन डोल्यो, राजे मनी कहे एम ॥  
 काम केल करणी हण काया नेम यिना मोहे नेम ॥  
 देवर दूर खडोरे, लोकां भरम घरेगा ॥  
 नारी संग किया सुरे, पावे पिंड भरेगा ॥१॥  
 जोयन रूप रच्यो जगदिसर, जगने मोहो जाल ॥  
 कामी मिनत्र मारण करतारे मूढ़ मे पड़दे फाल ॥देवर  
 केसर धरणी देखी काया, मूढ़ करे मन हुंस ॥  
 पिण न जेहेर हलाहल गोरी, जैसे धुली के तूस ॥देवर  
 देखी नेण काजल मुं भरया, जाणो दल घादल का ॥  
 कामी पुण्य मारण विष लिजा काम देयका भलका ॥देवर  
 कणक कलश मारिवा धणदेखी, मूढ़ जाणे मनमाह ॥  
 कामी भीज मराधण करना लोहा गाला की एहलाह ॥देवर  
 उज्जयल कुलनं कलंक चढ़ाये, नाखे दुरगन उंड़ी ॥  
 लोखे लाज जनम की खोटी, नारी नरकनी कुंटी ॥देवर  
 राजा जाणे नो घर लुटे, घर चढ़े मिर मंडी ॥  
 जगमथ मांही मूढ़करे कथा, न करणी जग भंडी ॥देवर  
 किरनां, गिरना, राज दुवारे, संचरना किर गलोया ॥  
 न मे दान दे दाली मराजन, दे खड़े आंगलीया ॥देवर  
 दुसमणगे हांमी चिनयियो, सांभल पान नु मिणी ॥  
 काम बजायी करसे हांसो, जामी साम्र लाखीणी ॥

॥देवर॥६॥

धंसछोत्र लागे तुम कुलधी, सहजग लेसी सिंचो ॥  
 परियानों पाणी उतरसे, जादव जोसी नीचो ॥देवर॥१०॥  
 भोजाइ सुं एह अकारज, उत्तम ने नवी चाजे ॥  
 अति मीठो हुवे तो पिण देवर, अखज कहो किम खापजे  
 ॥देवर॥११॥

सुणी पात लाज्यो मन मुनिवर, लागो राजुल पाप ॥  
 कुचचन जेमे कथा पाणी, ते खमजो मोरी माप ॥देवर॥१२॥  
 तुं मुज माता वेन सुहावण, तुं तिरथ तुं गुरणी ॥  
 तुं मुजतारण पाप निवारण, तुं मुज पातीक हरणी  
 ॥देवर॥१३॥

धनधन राजेमती सतवंनी, जिण लाख्यो रहनेम ॥  
 वचन वाण देई वस आय्यो, अंकुश देई गजजंम  
 ॥देवर॥

नगरी माहे वड़ी द्वारका सोरठ देश मंभार ॥  
 कुलमाहे जादव कुल मोटो, शीलवंत नेम कुमार ॥देवर॥१५॥  
 सती माहे राजेमती मोटी, मुनिवर माहे रहनेम ॥  
 गह पतमे विजय प्रभु सुरिदा, अद्धि हरप कहे एम  
 ॥देवर॥१६॥

॥ श्री महावीर स्वामी को पराणो ॥

दोहा—श्री अरिहंत अनंत गुण, अतिसे पुरण गात ॥

ज्ञानी ध्यानी मुनि संजमी, कहिए उत्तम पात्र ॥१॥

वाय्र नणी अनु मोदना, करतो जीरण सेट ।

ਆਚਕੰ ਤੁੰਚੀ ਗਤਿਲਹੀ ਨਕਸ਼ੀਯੋਗ ਨੰ ਹੇਠ

1153

दम शोभासा वीरजी, विचरतां संजम चास ॥

विशान्ता पुनं आविषा, हृग्यारमे चोनाम्

437

૨૪૬—ધોમાસો ડગ્યારમે જી વિચરંત સહ્યમધીર ॥

विमान्ना पुर में आधियाजी स्वामी श्री महाधीर ॥

जगत् गुरु असला नन्दनधीर ॥१॥

જાલે બેટ્યા જિનરાજ સગ્વીરી, મેને માગ અનોપમ સા  
મેં જાંક પગાઓ આજ ॥ જગત ॥ ૨ ॥

बलदेव जो देश, जी, निहां प्रभु साउम्य लीये ॥

नवम्याग नोमाग नोर्जा, स्वामी न नव कीध ॥अ०॥३॥

તીર્થા મટે નિદ્ર ચમેતી, પાલે આચરુ થમે ॥

अणकार करी ओर मयारी जाण्या भर्म नो मर्म ॥ज०॥

જાત પદ ઉપશર્માચારી સ્વામી શ્રી મહાવીર ॥

नाम कर्म। येन योग्यात्। ज्ञानेन कर्म देसु दान ॥ ज० ॥

गुवा मेरु इम चित्तवली, सकल होशी मज आम ॥

॥ ५ ॥ सायं शिवः प्रसीदति तदा भवति श्रीराम ॥ ५ ॥

\* अयं सः नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥

२३' साहज साधना की सेवा में नमः ॥ ज० ॥ ५॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मोक्षाय नमः ॥

मैत्रेयः कथं नरेण श्रमस्ततो न विनर्तनी कुरी यागंवार ॥७०॥



निरधन जिम जिम चिन्वेजी, निम निम निर फल धार  
॥ज०॥१६॥

स्वामी जी कियो निहां पारणो जी, कियो उग्र विहार ॥  
आया पाम संतानीयाजी, छे मुनि केवल धार ॥ज०॥१७॥  
यिसालानो राजवी जी, लोक सह आनन्द ॥

राय प्ररन करे इसोजी मतगुरु धरण पाय बंद ॥ज०॥१८॥  
मेरे नगर में कुण अछे जी, पुण्यवंत ने जसवंत ॥

कहे केवली आज अये जी, जीरण सेठ महंत ॥ज०॥१९॥  
राय कहे कीण कारणे जी, जीरण सेठ महंत ॥

दान दिपो श्री वीरने जो, पूरण छे जसवंत ॥ज०॥२०॥  
राय प्रने कहे केवली जी, पूरण दिपो दान ॥

ब्रह्म वर्पा निहां छई जी अवर नहीं परमाण ॥ज०॥२१॥  
देव लोक जिण वारमे जी, जीरण धार्यो वन्द ॥

अनद्विषां दिपो कल्यो जी, उत्तम कला सम्यन्ध ॥ज०॥२२॥  
एक घड़ी सुर दुंदुभी जी, जो नई सुणतो कान ॥

तो जीरण तेतो सटाजी उत्तम केवल ज्ञान ॥ज०॥२३॥  
राय जीरण बधावियोजी, अधिको मान सनमान ॥

मुख्य नगरमें धापीयो जा, जोवां पुण्य प्रमाण ॥ज०॥२४॥  
दान देवे सुपात्रने जी, से नही निरफल होय ॥

पात्र तणी अनुमोदना जी जीरण सेठ फल जोय ॥ज०॥२५॥  
इम जाणी अनुमोदना जी, दान सुपात्र रमाल ॥

दान देवेछे साधु ने जी, तेने नम मुनि माल ॥ज०॥२६॥

## ॥ श्री उपदेशी स्तवन ॥

पूख सुकून करीने, मानधारो भय पाया ॥

आर्य क्षेप ने कुल उत्तम छे, चली निरोगी काया ॥

अब धाने जोग मिलियोछे, धें ल्यो जिनघर जीरो नाम ॥

सुजानी योग मिलियोछे ॥

पूरी इंद्रिया हांपो आउ ल्यो, चली साधकी सेवा ॥

सुण जो जती गायक प्रणमुं, घाणी अमृत मेवा ॥अ० ॥२॥

आठ धोलरा टाणा मिलिया, नहीं धांरी सरभा सूंदी ॥

कुगुर कुदेव समरण, कुबुद्ध कुमत मनकूदी ॥अ० ॥३॥

आदेही धारी भस्मज होसी, किया चंजनसुं चरचा ॥

दान शील तप भावना भाव जो, लारें लिजो म्वरचा

॥अ० ॥४॥

चार पहेर का लेणा देणा, चार पहेर का घाटा ॥

आठ पहेर जय वित गया, तय आयां मुदल में तोटा

॥अ० ॥५॥

बिसा तीसा भलो पचासा, लगा निसाना नेमा ॥

करना होय तो करले प्राणी, हुवा बड़ा अंधेरा ॥अ० ॥६॥

रात दिवस तुं धंदो करतो, जिन जीरो नाव न लेतो ॥

तेरा सिरपर काल डूरेछे, बंध नगारो देतो ॥अ० ॥७॥

मात पिता भाई सुत बंधव, हुवा स्वारथ बैला ॥

दिनरे खतरा जासी जीवहे, सवी फनारा मेला ॥अ० ॥८॥

साथ भूठ कर जगने ठगिया माल पराया खाया ॥

अण चिंतवीयो थांरो आपो, आउट घडीरी सय माया

॥अ०॥६॥

साची सनकर देवने सिमरया, जे सिमरया जे खोटा ॥

याद नहीं आणी मनमाहे. भया जङ्गलमें मोटा ॥अ०॥१०॥

माया ममता सयी मेटकर, जिनघरम कर वासको ॥

कहे साधु जी सुनो भयिकजी य, इण अवसर तुम मतडु

॥अ०॥११॥

मनगुरु मिश्र हियामें धारो, कुबुद्ध कुमन निवारो ॥

यार यार मनगुरु समजाये, काया कारज सारो ॥अ०॥१२॥

करो सामयिक पोसा पडिकमणा, देखम गौतम माला ॥

दिन दिन चन्दनानेडा आया, कीसा भग्म घंटा ॥अ०॥१३॥

दान धरम भे कद नहीं कीना, मन समता नहीं आनि ॥

आउया जाना यार न लागे, ज्यों अङ्गलमें पाणी

॥अ०॥१४॥

जीव जंवे जीवाने बंछे, मरण न बंछे कोय ॥

जीव जीवाने हणना थका, मृक्त न पहुना कोय ॥अ०॥१५॥

## ॥ श्री पारमनाथ जी का स्तवन ॥

तुम नसे विगतो जी ॥

ॐ श्री साबन्तोया महागज मिश्र पर, बंछे विराजो जी





गातायां कलपन् भरां धवलयन्माकाश मापूरयन् ।  
 दिक्कण्ठं कमयन् सुरासुर नर श्रेणीं च विस्मादयन् ॥  
 प्रत्यागच्छं सुमयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाद्भोलपन ।  
 श्री चिन्तामणि पारयं संभव यशोद्गमरिपरं राजमे ॥१॥

तृपया मां विनिमित्तमोदिनमणिः कामेषु कृष्णे श्रृणि-  
 मीने निगमरणिः सुरेन्द्र करिणी उयोनिः प्रकाशारणिः ।  
 दान देव मणिर्ननासम जन श्रेणिः कृपा मारिणी ।  
 विरवानन्द मृगा मृणिर्नमिदे श्री पारयं चिन्तामणिः ॥१॥

श्री चिन्तामणि पारयं विरवजनना मन्त्रीय मय्य भया-  
 दृष्टवान् नम श्रिय सप्तमयन्नाशकमानक्रिमणम् ॥  
 मृनि वीरान् दानवायंष्टु विना निष्ठ मनावापिणि ।  
 दृष्टव दृष्टवान् दृष्टव नम कष्ट प्रणय मम ॥२॥

पश्य पश्यन्मय नम पश्यन् प्रीत्याम गमा तम  
 । नम पश्य करिणीकर्मि दृष्टवान् मादृश विरव नमः ॥  
 प्रीत्याम नम ममयन् कर्मणाकर्मि नम राजमे ।  
 मन्त्रीयान् प्रीत्या मन्त्रीय नम पश्यन्मय पश्यन्मय ॥३॥

पश्यन् प्रीत्याम दृष्टवान् मन्त्रीयान् कर्मणा कर्मणा  
 दृष्टवान् प्रीत्याम दृष्टवान् मन्त्रीयान् कर्मणा कर्मणा  
 पश्यन्मय पश्यन्मय पश्यन्मय पश्यन्मय विदो ।  
 मन्त्रीयान् प्रीत्याम मन्त्रीयान् कर्मणा कर्मणा

श्री चिन्तामणि मन्त्रमो कृति युतं जँही कारसाराश्रितं ।  
 मो मर्हं मिऊण पास कलितं धँलोक्यचदयाचहम् ॥  
 देधा भून विपापहं विपहरंश्रेयः प्रभावाश्रयं ।  
 सोह्लासं बमहाक्षितं जिन कुल्लिङ्गा नन्ददं देहिनाम् ॥७॥

ॐ ह्री श्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो ।  
 हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्व मधिपं चिन्तामणि संज्ञकम् ॥  
 भाले वाम भुजेच नामि करको भूयो भुजे दक्षिणे ।  
 पश्चादष्टदले पुते शिवपदं द्वित्रै र्भवंर्यान्त्यजो ॥८॥

## ॥ स्त्रग्धरा ॥

नो रोगा नैव शांको न कलह कलना नारिमारिप्रचारो—  
 नैवाधिर्नास माधिर्नच दर दुरिते दुष्ट दारिद्र तानो ॥  
 नो शाकिन्यो ग्रहानोन हरिकरिगगणा व्यालवैनाल जाला  
 जायन्ते पार्श्व चिन्तामणि नतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम्  
 ॥९॥

## ॥ शार्दूल विक्रीडित ॥

गीर्वाण द्रुमधेनु कुम्भ मणयस्तस्पाङ्गणेरङ्गिणो ।  
 देवादानव मानवाः सविनयां तस्मै हित ध्यायिनः ॥  
 लक्ष्मी स्तस्य वशा वशेव गुणि नां ब्रह्माण्ड संस्थापिनी ।  
 श्री चिन्ता मणि पार्श्वनाथ मणिशं संस्तौतियो ध्यायते ॥१०॥

## ॥ मालिनी ॥

इति जिनपति पार्वः पार्व पस्वाख्य यक्षः  
 प्रदलित दुरितौघः प्रीणितः प्राणिसार्धः ।  
 त्रिभुवन जनवाञ्छा दान चिन्ता मणिकः ।  
 शिष्य पद्म तस्वीजं चोघिवीजं वदामु ॥११॥

इति

## ॥ श्री उवसग्गहर स्तोत्र ॥

( अनुष्टुप् )

उवसग्ग हरं पामं । पामं वन्दामि कम्मघण मुक्कं  
 विसहर विस निन्नाम । मङ्गल कल्पाण आघासं ॥१॥  
 विसहर कृत्तीग मंगं । कटि धारंइ जो तथा मणुउ  
 तस्म गहरोग मारो । मुट्टजरं जं त उवसागं ॥२॥  
 चिट उदुरं मंगो । नुक्क पणामोवी बहुफलो हो  
 नरभिरिउसुवी जीया । पावनि न दुक्ख दोगच्छां ॥३॥  
 ऊँ अमरनर कामभणं । चिन्तामणी काम कुंम माइया  
 सिरि पाम (पार्व) नाह सेवा । गहाणं मच्चये विद्रासतां ॥४॥  
 ऊँ ह्रीं श्रीं ॐ ऊँ नुह दमणेण मामीय ।

पणांमइ रोग मोग दुक्ख दोहगं  
 कल्पनरु मित्र जायड ।

ऊँ नुह दमणेण समफल हेऊँ स्याहा ॥५॥

जँ हीं नमिउण घोषणा माय । मायावी एण भरणागिर्द ॥  
सिरि कामराज कलीं । पास जीणंदननंसामि ॥६॥

जँ ही श्री पास विसहर । विश्व मंतेण भाणंभाए ।  
वोभरण पोमावइ देवा ॥ जँ ही क्ष्मल वें युस्वाहा ॥७॥

जयउ धरण देव । पइ मट्टुत्ती नागणी विश्वा ॥  
विमल भाण संहियो ॥ जँ ही क्ष्मल वें यु स्वाहा ॥८॥

जँ धुणा मीपासं । जँ ही पणमामी पर मभत्तीए ॥  
अठखर धरणें दो । पउ मावय पय डीयो कीत्ति ॥९॥

जस्त पय कमलसय । घसइ पोमावय धरणें दो ॥  
तस नांमइ सयलं । विसहर विस नासेइ ॥१०॥

तुह सन्पत्ते लद्धे । वित्तामणी कप्प पायवणभ हीए ॥  
पार्वती अवीन्धेणं । जीवा अवरामरं ठाणं ॥११॥

जँ नठ ठमय ठाणे । पणठ कमठ नठ संसारं ।  
परमठ नीठी अठे । अठ गुणा धीसरं वन्दे ॥१२॥

सनुह नाम सुद्धे मंते । जो नर जपंति सुद्ध भावस्स ॥  
सो अयरा मरं ठाठां । पावंती नयगय सुखं ॥१३॥

पनास गोपी डांकुर । गहदंसण भयं काये ॥  
आवीन हुंती एतहवी । तसी भंगुणी जासो ॥१४॥

पिउजांत भगंदरं । खास सास सुल तहनीवाह ॥  
सिरि सामल पास महं । तनाम पउरप उल्लेण ॥१५॥

रोगजल जलण विसहर । चोरारि मईंद गयरण भयार् ।  
 पाग जिणनामसं । कित्तणेठापस मंति सम्भाइ ।  
 इअंम शुओ महायम । भत्ती भरनिपभरेण हीय एव  
 ना देव दीउम्क बोहि । भवेभवे पास जीण चाइ

॥ ऊँ ॥

॥ श्री घटाकरण स्तोत्रम् ॥

( अनुष्टुप )

ॐ गंटा करणो महावीर । सर्व रक्षाधि विनाशकः  
 विरहोदक जगं धाम्ने । रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥  
 वज्रस्य निष्ठस्य देव । निम्बिनोऽक्षर वंशिमिः  
 गणपतस्य प्रणम्यति । यामपिन कको द्वायाः ॥  
 नमस्तस्मै नम नान्दिन । यानि कर्णोत्त वाक्षता ॥  
 शार्ङ्गानि नमस्कृत्याम् । शशमा प्रभवन्ति ॥३॥  
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै । नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥  
 वन्द्यो नमस्तस्मै । नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥  
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै । नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥  
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै । नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥



## ॥ प्रेम मंत्रन ॥

कष होगा प्रभू कष होगा, यह दियस हमारा कष होगा ।  
 हम मयसे मया प्रेम करें, यह दियस हमारा कष होगा ॥  
 हम पतिगो से अनि प्रेम करें, और कुरमन पर भी रहम करें  
 हम मय जीयो से श्रेम करें, यह दियस हमारा कष होगा  
 अनिमान भ्रम को छोड़ोगे, जिन पाणि रहस्य समझेंगे  
 फिर लय हृदयमें घर ऐगें, यह दियस हमारा कष होगा ।  
 यह निन्दा युगली दूर रहे, और ईर्ष्या मन से भग जाए  
 हृदय में प्रेम उमड़ आए, यह दियस हमारा कष होगा  
 यह माधु मेरा मेरा है, यह मंग नी मेरा मेरा है ।  
 यह क्रिष्ण :टो मिटे, यह दियस हमारा कष होगा ॥  
 इस पक्षगन को छोड़ग, और मय हृदय में धारेंगे ।  
 मुखमें गच्छा बना मग, यह दियस हमारा कष होगा ॥  
 बायोम क वर्नीम हृग और दिन २ प्रति यदुन जावे ।  
 यह चर्मके दीप प्रम कर यह दियस हमारा कष होगा ॥  
 स्वभाव गुण न रमण कर और बिनाम गुण को छोड़ेंगे ।  
 फिर मन मुनि जिन गुण गाय यह दियस हमारा कष होगा ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

'जय मुख बना ही ना प्यार प्यारी बनो ।

केशव जान डगाना हो ना प्यारी बना ॥

मदम दिना काहुं माधु न जाय म्याम कर मे पाव रुक जाये ।

कर्मखपाना हो तो प्यारे त्यागी बनो,  
त्यागी को सुर नर नमते हैं ।

घरते चरण विघ्न टलते हैं,  
गर्भ विच नहीं आना हो तो प्यारे ॥

चक्रवर्ति की रिद्धि भारी, त्याग सामने तुछ हैं सारी ।  
आत्मा उच्च बनाना हो तो प्यारे ॥

जहाँ वैराग्य बर्हा पावे, सुर वीर नर पार लगावें ।  
जग से मोह हटाना हो तो प्यारे ॥

पुद्गिलक सुख भागे चक्र गनिमें तृष्णा पूरी हुई न जगतमें ।  
दुख मिटाना होतो प्यारे ॥

इन्द्रिय जनीत सुख विषय समहैं, किन्पाक कल यह शास्त्र  
कथन है ।

सत्त्वा सुख पाना हो तो प्यारे ॥

वीर प्रभूने त्याग किया था, तन मनसे बलिदान किया था ।  
सन्त मुनि सुख पाना हो तो प्यारे ॥

॥ गायन ॥

यो तन पावनो रे या को मत कोई करे गुमान ।

तिर्यकर चक्री हुआ रे जीन का कंबन वर्ण शरीर ॥

आगम देवे साक्षी तन को, छोड़ गए जमीर गए १ ।

अन्तेवर रम्भाज सीरे रमणी रूप विशेष ॥

गहणा कपड़ा जेवर जड़ाऊ मोहा सुर नर देखा ।

भीतर हाड़ मांस रुधिर हैं जिसमें भरी दुर्गंध २ ॥

ऊपर मड़ियो चामड़ो, याँ ये मत भूलो मति नंद ।



ऊपर रंग सुरंग छेरे तां ऊपर मिंगार ॥

मन मानी करता घणारे उरमें भरी भंगार ३ ।

समझो २ सच नारी भय पूर्व को सोच ॥

कहाँ से आया कहाँ जाना है संत मुनिकर सोच ४ ।

॥ गायन ॥

मनवा मोह नींद को त्याग २ नाम रूपमय यह जग स्वप्ना  
क्या सोचे है जाग ॥

जिन विषयों को आज भोग रहा कल वह स्वप्न समान ।

इनमें कहाँ भयो रत मूर्ख, अज हो अचेत अजान ॥

मायाका सुख आदि अन्त वत् यों से क्यों भरमाय ।

ब्रह्म अनन्त अनादि है ये वाको क्यों बिम राय ॥

मनुष्य जन्म दुर्लभ है मिलना बार २ नहीं पाय ।

उठ स्वरूप चिन्तन कर जांरं बहुरी यहाँ नहीं आय ॥

॥ गायन ॥

ममय के फेर से जो भाग्य दशा और की और ।

रितु आज्ञा रामचन्द्र ने धन की कही नैयारी ॥

आज चाप से सम्मुख लड़ने देते मुग़ से गाली ।

मन्य निभावन हरिश्चन्द्र ने दिया राज का दान ॥

खाटी गवाहो दें फिरे भारत के संतान ।

मन्य वन बारी निष्पन्न पिना थे रहे बाल ब्रह्मचारी ॥

आज उनही के कुल में उपजे ताके पराई नारी ।

नल राजा ने दम्पति से चीड़ काड़ कर लीना ॥

आज तो गहणे कपड़े खानिर नित उठ पति से लड़ना ।  
 कहाँ गए गोपाल कृष्ण गोओं के लाड़ लड़ाते ॥  
 आज अधर्मी, गो बेटी को बेच २ कर खाते ।  
 पहिले पति परदेश सिधाते नार उदासीन होती ॥  
 आज पति परलोक सिधावे रगड़ २ पग धोती ।  
 काम देव अरणक भ्रावक को देव ने शीश भुकाया ॥  
 आज भैंरु रामदेव करणी माँ शीश भुकाया ।  
 पद्मावती और जोहर माई धारणी शील रखाया ॥  
 अग्नि कुण्ड में जिन्दी जल गई जवि खेचली पाया ।  
 आज की पाया मोज शौक फैसन में आनन्द माने ॥  
 पति धर्म को जो नहीं समझे मनुष्य जन्म को हारं ।  
 पहिले की अवला नारि तो सासू नन्द की सेवा करतो ॥  
 आज की अवला रगड़ भगड़के मनमाना हुक्म बलाती है ।  
 मोटा खाते मोटा पहनते मोटा जिनका प्रेम ॥  
 आज तो पनला पहिने खावे पनला जिनका प्रेम ।  
 सदा याजी और सिनेमा फैसन में धन को नुदावे ॥  
 दान धर्म के हित कहे तो ऊँचा थोव सुनावे ।

॥ गायन ॥

विषय बढ़ा दुख दाई अरं चेतन प्यारं ,  
 क्यों इसमें ललचाय अरं चेतन प्यारे ।  
 मोह कर्म बस यह भाते हैं, शुद्ध बुद्ध भूल दुख पाते हैं ।  
 जन्म मरण बढ़ जाए चेतन प्यारे ॥

विषय भोग जय तक नहीं छूटे तब तक कोई मुक्ति ना पहुँचे

शास्त्रों में पुर माय अरे चेतन ॥

अमृत छोड़ जहर जो पीते चतुर नहीं वो मूर्ख बजते ।

चतुर गनि रूखाय ॥

शब्द सुनी हिरना बस होवे दीपक देख पतंगा रोवे ।

भँवर सुगन्ध छे दुःखपाय ॥

रसना बस ब मीन भरे हैं कामाना गज हथिनि परे हैं ।

भट से प्राण गमाय ॥

पाँध घोर से प्रेम करे है, आत्म सुख का नास करे है ।

सन्न मुनि वो गाय, अरे चेतन...

॥ गायन ॥

मुझको दूर रग्यो भगवान तैसे धिन धर्मी लोगों से,

तैसे कैशन के लोगों से ।

परम्परा गत साक्षात्पन का कर दिया देश निकाला,

उल्टू जैमा रूप बनाकर फिरता है मतयाला ।

सतसंगत में कदम न आवे गप्पा मूँच उड़ावे,

यनकें मंडली सांझ सवेरें एक मिल फिर आवे ।

परज उठो मृतो उठो आलस्य न छोड़े,

छे बीड़ी मुंहमें पीनो टट्टी सामो दोड़े ।

पहिले पीबे चाय वो तो पीछे मुंडा धोवे,

मुँछ मंझावन करे हजामत मर्दपणा ने खोवे ।

दाईं ओप पनचुन पहिन कर नेत्रों पर नेत्र चढ़ावे,  
 सेंट सुगंधित डाल डाल में सुग्नमें पान चवावे ।  
 जीते जी नां चाप वृद्ध की सेवा नहीं बजावे,  
 मरे बाद मोसर क्त मुण्डा लाहू मूय उड़ावे ।  
 शुद्ध गुरु की सेवा छोड़ी भेरुंराम देव को ध्यावे,  
 गये पण्डों के चरणों में जाकर शीप नवाए ।  
 हाथ बांसे तम्मागू से दांत गधा सा दीखे,  
 ऐसे मनुष्य की संतान बे ज्ञान कटा खुँ सीखे ।  
 पुरुषार्थ ने खोटो समझे मांग तांगने खावे,  
 ऐसा मनुष्य पराया वश है वृथा जन्म गमावे ।  
 मर्द हो के सीखें वो तो जनाने की चालें,  
 चोटी न रखे टोपी न रखे खुलो सिरियों डोले ।  
 भांग पीवे और उल्लू रहवे मनमें समझे मोटे,  
 अधगेलामें अक्ल घनावे उनसे भी बे खोटे ।  
 खूब गया भारत का पैसा अब तो मस्ती छोड़ा ।  
 नियम धर्म में प्रीति लगाकर मनो से प्रीति जोड़ो ॥

॥ गायन ॥

चुनलो २ वीर प्रभुजी मन बश में नहीं होता,  
 प्रचल पुण्य का उदय हुआ तब मानव तन पाया ।  
 सत्संगत का निमित्त मिला फिर जैन धर्म भी पाया,  
 मन बश करने जोग लिया फिर साधु भेष बनाया ।

गुरु गणेशी चरण भेट या ज्ञान ध्यान सिन्नलाया,  
 दिन में राजा दिन में योगी बनकर ध्यान लगाया  
 दिन में छैल छपीला होकर दौड़ दिशावर जावे,  
 पहिले बाग बगीचा जाकर गोठ घूमरी खावे ।  
 इन पापी ने डर नहीं लागे जहल में फिर आवे.

जिम तिम जत्न करीने राखू निम २ अलगी भागे  
 शर्म रति नहीं राखे किसकी इधर उधर को भागे,  
 जै जै बात कहूं नहीं धारे आप सति रहि न्यारो ।  
 सुरनर पण्डित जन समझावे समझे न मारो सारो,  
 मैं जानूं यह लिंग नपुंसक सकल मरदने ठेले ।

नौकपाय मेणी गज चढ़ता श्वान लठि गत भेठे ।  
 धर्म ज्ञान सम्य धान भूलावे पाप से भय नहीं खावे ।

सम्यक ज्ञान बिना फिर भटकता विषयों में ललचावे  
 पलभर में नर्क दलित करना पल में स्वर्ग चुनाता ।

पलमे निगोद भाले घुनता है आकाश गगनमें जाता  
 टणर खानिद दुख में भुग्या बागों नाच नचावे ।

और टिकाणे साधे २ धर्म मे आगे भागे ॥  
 इस भवमें प्रभु मन धम कइदो जन्म मरण मिट जावे ।  
 वृंय गणेशी नाम रटे से संन मुनि सुख पावे ॥

॥ गायन ॥

कहे २ अय चैनन करनी धर्म साधमें जाय,  
 पल पल आयु जानी दिन में पीछे यह नहीं आय ।

नहीं भरोसा साँस स्वास का कद निकली यह जाए,  
 राज, तख्त और भरा खजाना यहाँ धरा रह जाए ।

खर की नारि प्राण से प्यारी वो भी साथ न जावे,  
 काँच में सुखड़ो नरख २ कर फूलरयो मन माय ।

हाड़ मास मल मूत्र हैं अन्दर आखिर बिनसी जाय

भाई वन्धु कुटुम्ब कयीला सब स्वार्थ के भाई,

अन्त समय दांतो की चुपें काढि लेगा भाई ।

हीरे पन्ने गहणे पहिने धैटे मोटर माय.

आगे पीछे मरना तुमको मोहन भोग छिट काय ।

तू नहीं किसका कोई न तेरा सब झूठा है नाता,

खरा मित्र धर्म है पारो यही साथ में जाता ।

चार कोस जय जावे भाईयाँ धे खर्चो लारे,

पर भव जाना तुमको चेतन इसका करो विचार ।

अपना २ देश पुकारत चले गए केई राना,

इन्द्रजीत, रावण अभिमन्यु भीम जैसे बलवाना ।

करना हो तो करले प्यारे कालर्षद मिर आए.

यह नहीं छोड़े भाई तुमको, अय भटकेसे ले जावे ।

दानशील तप भावना साथे निरावाद सुख पावे,

पूज्य गणेशी नाम जपेसे जन्म मरण कट जावे ।

॥ गायन ॥

सचा मित्र संसार में एक धर्म नजर में आना,

मात पिता और भगिनी भाई भूली हैं संसार सगाई ।

जिन पर है तू रहा फुलाई

देगें धोष क्षण चार में जय निकल पवन है जाता ।

पाप कपट कर द्रव्य कमाया, अनहंदा तूने जीव सुताया,

निम दिन जिम पर रहा भुलाया

क्यों कंसा हरक प्यार में, है धन पर भव दुख दाता

सुन्दर ऊँचा महल चुनाया विषय भोगों में तू ललचाया

भूरी माया में भरमाया, सोच समझ दिन चार में

छूटेगा सबसे जाना ।

मंकट भय दुख सब टल जायें, दुरमन आकर शीश नमार्थें

जो निज भर्म मद्रा मन ध्याये पायें शिव सुख स्थान को

सब मिटे गेग का खाना ।

। गायन ।

कलकृत गद आगे २ मृग स्त्रीजो सदा हाल

वन सोनी जो मान भिना वृद्ध नर जो ने चाल

नक लाग नो दुख मरे पायो मानो मान

सनी विचारी फिर उगारी बेग्या ओढ़े साल

उद मान बिना गर मरे गद गर उड़ाये साल

जानी लाग नो फिर नोहरी मरे है अपाल

कली मान म यथा मित्र नुम बजा प्रभु त्रिकाल ।

दुनिया में जन्म पाय बना क्या है कमाया

माया में रह नर नरम जरी ममाया, हाँ यो ही मंशाया

Handwritten text at the top of the page, possibly a title or header.

Main body of handwritten text, consisting of approximately 15 lines of dense script.

Second section of handwritten text, consisting of approximately 10 lines of dense script.



राज हार सब भाई हारे हारी द्रोपदी नारी  
 अत्याचार किया द्रोपदी पे दुर्योधन ने भारी  
 जल्दी ही फल दिया जुल्म ने कौरव कुल संधारी  
 कष्ट पड़े पर सत्य धर्म ही करना है रम्बवारी  
 मत्य ने ही द्रोपदी को लज्जा राखी समा में जारी  
 परोपकर निस्वार्थ सिखाती कुन्ती माता भारी  
 ब्राह्मण के बदले राक्षस के भेजा सुत सुख कारी  
 विद्याधर कैद पड़ा जय दुर्योधन अहंकारी  
 लय दुःखापा धर्म नन्द ने अपना यंधु विचारी  
 बिना जान पहिचान दुखी के कैसे हो सहकारी  
 सुखी किया अर्जुन ने इन्द्र को राक्षस बिद्रोह हारी  
 दुष्टों को संगति से बिल्कुल जानि हैं मनि मारी ॥  
 कौरव मग भीषम ने गाये चांगी विराट मंभारी  
 पर नारि के छेड़े का फल होनाहें दुख कारी  
 भीमसेन ने मारा कामो कीच की भूमि पछारा  
 सलाह कराने प्यासिर मज्जन कर्त कोशिश भारी  
 पाण्डव काँगव बैर मिटावण बन गए दून मंभारी  
 प्रेम भाव में छोटे बड़ों का भाव न गव्वा विकारी  
 रण में अर्जुन का रथ हांका खुद ही कृत्र पिहारी  
 गृहस्थ धर्म पालन कर पाण्डव हो गए मुनिव्रत धारी  
 धर्म शुभा यत्न कर यत्न गए अमर मदा अविकारी



॥ गायन ॥

करले २ ये चैनन करनी समय मिला अनमोल  
 भूल भूँदया में सब खोया खावे गोते भारी ।  
 अन्न काल से भटक रहा है अब करले तैयारी ॥  
 मात पिता सुत बन्धव भगनी धन दोलत भी पाया ।  
 चोर पति हैं कुटुम्ब नहीं हैं क्यूँ इसमें भरमाया ॥  
 पर की खानिर काल गमाया मोह माया में लुभाया ।  
 करि कमाइ नहीं कुछ आकर उलटा यहाँ गमाया ॥  
 तू नहीं किमका कोई नहीं तेरा सब भूँटा है पसारा ।  
 पर को बिन्ना छोड़ो चैनन करलो निज निस्तारा ॥  
 अपना २ देश पुकारन चले गए कई राजा ।  
 रामचन्द्र युधिष्ठिर जैसा जग में नाम कमाया ॥  
 मूल पुँजा को हार मन ना नका रुमा कर जाना ।  
 मनुष्य जन्म मिलना दुष्कर है साथ चैन हो जाना ॥  
 पुद्गल नामी तू अविनामी यही नन्ध है मारा ।  
 पुद्गल चाह मिटावे मन मुनी पा ७ मोक्ष द्वारा ॥

॥ गायन ॥

मानो माना गी त्याग बहिनो छोड़ो सब मिथ्यात ॥  
 मनुष्य जन्म पाया मुश्किल से सुनलो ध्यान लगाई ।  
 अन्य अगमे जनम न खोवे गुरु कहे समझाई ॥  
 जनी कुल में जन्म लिया मन गुरु की मगत पाई ।  
 तेन साध्व का पदा मुनो जरा मिथ्या दिल से हटाई ॥

होली माता तीज न पूजो राखी और गनगौर ।  
 राम देव भैरु भोपा को पूजा फल न होई ॥  
 चोदरा में दाना पानी डालके करी पूजा ।  
 नीति मार्ग दया को छोड़ा ये क्या उल्टा सूझा ॥  
 भाड़ो और मूर्ती को पूजके धन ओलाद को चावो ।  
 उनकी रक्षा उनसे न होती तो तुम क्या फल पावो ॥  
 सुष देव गुरु धर्म शास्त्र से रखो सच्चा प्यार ।  
 सफल होयगी मनो कामना संत मुनि जय फार ॥

॥ गायन ॥

तज दो तज दो ऐ प्यारी पहिनो फैशन का श्रद्धार  
 तज पुराने जेवर अब तो पायल को अपनाई ।  
 सीधागथना छोड़ा अब तो टेढ़ी माँग जमाई ॥  
 पति देव की एक मास की द्वादश की है तनख्वाह ।  
 तुम्हें फैसनेविल कपड़ों का खूब लगा है चसका ॥  
 रिष्टबाच तुमको एक चाहिए साठ रुपया वाली ।  
 पियर सोप नाहने को चाहिए ढेढ़ रुपया वाली ॥  
 सादी वस्तु सादा कपड़ा सादी धन कर रहना ।  
 नाथ मुनि कहे सुख चाहो तो मानो मेरा कहना ॥

॥ गायन ॥

तुम सुनो सभी नर नार ध्यान घर आज कृष्ण गुण गाओ  
 जयन्ती आज मनाओ ॥

पापों की कल मिली छाई थी दुनिया भी अति दुःख पाई थी  
 फिर जन्म लिया उसी धार सुखी जय पायो—जय  
 ये अरध निसानी भी आई थी घनघोर घटा भी छाई थी  
 अथ करके आय प्रकाश पुण्य प्रगटायो ये धर्म दलाली  
 भी की थी ।

दुनिया को साता दीनी थी फिर बांध तिर्थकर गोत्र  
 अति सुख पायो—जयन्ती  
 सेवा करके यत्नाई थी, साथ जीवन पे रखाई थी ।  
 अरे बुढ़े की उठावे हँट नाम कमाओ  
 जो महा पुरुषों के गुण गावे, जो इस भयपार अथ  
 सुख पाए ये मनुष्य जन्म को पाय भाव सुध लायो ॥

॥ गायन ॥

क्या २ सत्य ताई यह है वृक्ष हमें सिखलाते,  
 अपने अपने मोसम पे जय वृक्ष लूथ फल जाते ।  
 छोड़ शीघ्र करड़ाई नम्र हो नीच को भुक जाते ॥  
 मार मार कर डेले लोग जय चोट इन्हें पहुँचाते ।  
 तब खुश होकर देवो भीटे फल पे वृक्ष बचाते ॥  
 सर्दी गर्मी वर्षा का दुख अपने पर ही उठाते ।  
 पर निज आश्रित जीवों को तो हरदम सुख पहुँचाते ।  
 सदा दमरों को फल दते स्वयं कभी नहीं खाते ।  
 दान वीरता और कृपणता साथ ही साथ सिखाते ॥





॥ गायन ॥

सुनलो र ओ यंधु जग में कैसे थे नर नारे ।  
 सत्य की खातिर हरिचन्द्र ने भरा भंगी घर पानी  
 दुख सहे रोहित सुत कैसे पिक गई तारा रानी ॥१॥  
 राम लखन और सनी सिया ने बन में दुख उठाया  
 पितु आज्ञा और भाई प्रेम का जग को पाठ पढ़ाया ॥२॥  
 आठ ललनों का सुख धन जम्बू ने छिट काया  
 धोर पांख सो को समझाके मोक्ष गति को पाया ॥३॥  
 कामदेव अरण्य आचक को देव डिगाने आया  
 निरचल रहे धर्म के ऊपर सुर ने शीश भुकाया ॥४॥  
 गन्दक गन सुख माल मुनि सुर क्षमा वन्त ते भारी  
 खीरे रत्ने ग्याल उनारो दिगो न बीर लगारी ॥५॥  
 काया माया मोह हटाया ब्रह्म तज सुख पाया  
 केवल मार यही दुनिया में धर्म कर सीध माया ॥६॥

॥ गायन ॥

तन नहीं छा कोई चेतन निकल जाने के बाद ।  
 फंक देने कल ज्यों खुशायु निकल जाने के बाद ॥  
 आज करने जो किलाले खेलते हैं माथ में  
 कल देख डेरंगे तन निर्जय हो जाने के बाद ॥  
 यात भी करने नहीं आज धन की गठ में  
 भिक्षु नजर आने वही नकदीर फिर जाने के बाद ॥

बोलते जब लगे सगे हैं जय चार पैसे पाम में  
 नाम भी पूछे नहीं पैसा निकल जाने के बाद ॥  
 स्वार्थ प्यारा रह गया असली मोहव्यन उठगई  
 भूल जाना मां को पछड़ा पै निकल जाने के बाद ॥  
 भाग जाना हंसा भी निर्जल सरोवर देख कर  
 छोड़ देते वृक्ष पंछी चत्ता झड़ जाने के बाद ॥  
 इस अधिर संसार में क्यों मगन कुंदन हो रहा  
 देख फिर चूता नहीं असुन्न हो जाने के बाद ॥

॥ गायन ॥

यूँ कोई पड़ो पसरने डागी धारे कणी जगह जाबाकी ।  
 कटी पखरगी कटी अंगरखी कटी पागड़ी नाखी ॥  
 अरे दीकट टेम री खबर खोज नहीं कटगी गांठ टका की ।  
 अरे घर घर जाण लुओ यो गाफिल रंग घणी दांडगी ।  
 चढ़े जड़ी ने पड़े उतरने या है रीत उनकी ।  
 आयो कठे सु कठे उतरंगा कितना टेसन याकी ॥  
 खादी भंग गाल में की धी योतल पीपी आखी ।  
 कौन सुणे न किने कैवाँ हालत है नशा की ।  
 शंकर सावधान हो जाने देख दशा दूजा की ॥

॥ गायन ॥

ईश्वर का गायन नहीं किया तो क्या है गायन गाने में ।  
 प्रभु के प्रसाद में स्वाद नहीं तो क्या है वरफी के खाने में ॥



मिर जाये चाहे शत्रुन्जे गिर नारि सी करके औरमधुग ।  
 मन शुद्ध नहीं तो क्या है गंगा में गोता छाने से ॥१॥  
 दिन रात मंदिरों में जाकर मिर घिस्ते २ घिस ढाले ।  
 संतन स्वरूप का ध्यान न हो तो क्या है ठोंग बनाने से ॥  
 पंडित उपदेशक का पद ले मुंह फाड़र उपदेश करे ।  
 यदि शुद्ध मत्स्य आश्रम नहीं तो क्या सिवान्त सिलाने से ॥  
 चाहे मृत्यु जन की अर्थ यहाँ कितना मिष्टान्न तैयार को ।  
 उपकार गुणों का स्मरण न हो तो क्या है श्राद्ध जमाने से ॥  
 मीठे अमृत सम वचन कहे अनुराग प्रेम से भरे हुए ।  
 यिय कृष्ण पेया मुंह बंद करके क्या मिथ्या प्रीति दिखाने से ॥२॥

॥२॥

कोटीम देव देवी पुजो चाहे प्रियम इच्छा से ।

र काशी राम यदि मुक्ति नहीं तो क्या दया धर्म कमाने से ॥३॥

॥३॥

#### गणन

मन्त्रा मन पुर की नृम मीमा नवी नर जावनारं

नन आ मृगत्या आ ग्याग्यान मिद गनि पावनारं ।

इका इर अरिपन का गान लप्ता नर प्रोदा अभिमान

गला पुर अना रंजवान रा पुर अन्दर जीय आनिर धर जावन

नवा नवाना नव व नी जता जनी की

रंज मिदानो कन दृष्ट कनी मन थोन्तो चहे मर जावनारं

गग रहन मना की की १ ददा डाली दुम न दीजे

हा हा पर भव का कीजे दढा डील करो मन भाई फिर पछतावनारे  
 तना तू क्या लेकर आयो धया धिर नहीं रहेगी  
 माया ददा दूर हटदे माया धधो धारे समकित रंग  
 मेद गति पावनारे पपा पाप को दूर हटावो फका फिरे  
 हीं पछतावनारे घया यचन को खूब निभावो भभा भक्ति  
 अगर हरगिज मोक्ष नहीं पावना रे  
 या याद को ईश्वर को ररा रोको अपने मन को  
 ला लोभ करो मत धन को ववा चोरी पल को छोड़ तिर जावनारं  
 सा समाकिन को सार पपा वह  
 य हृदय विचार शशा शास्त्र  
 य उचार हहा हंस राज कहै हृदय दया विचार नारं

॥ गायन ॥

मन पीयो तमाखू आवे मुखड़ा री भूँडी वामना  
 जरदो खावो चूनो रचावो जिनसे विगड़े धन  
 पद्मीन बोली धुक २ क्यूं जगह विगाड़ो कन्म  
 मगज सड़ावन वाली या तो रही न नरकी डीन  
 कपड़ा वासे आप खाँसे आवे छीक पर छीक  
 हुक्को यड़ी चिलम पिचे से घर २ मांगि भीख  
 चले बापरो उड़ चिनगारी नहीं पीवन में डीक  
 आग लगा धणी आदिका घर का पैमा जावे  
 लोग हंसै और घर में हानि ह्यी धाने समझावे  
 समझ तमाखू सृंग लीन काई कुत्ता न खावेगा  
 जिनको पीवे मान बीसरे उनका खाश भाग

कंथा मानो मनि करो जी बुझी तमाखू हेत  
 टका एक की टांट में मारे दिन उगा ही देत  
 हुका से हुरमत सब बिगड़ी लाज शरम गई हूट  
 सका ऊँठा भूटा पीवे गयी हिया की फूट  
 सुन्न दुन्न देख दम्प परायो धे लेया भागी कीन्हों  
 भूला मरता टापर रोवे धुक २ तमाखू पीवो  
 धाँको लखो का जोसरे फेर बिगाड़े दंत

गुल उघाड़ी रास उड़ावी रांड तमाखू खाथ  
 बिड़ी पाल दियासलाई फेकें ताके बीड़ सभी जल जाने  
 घास तणो नुकसान

बीड़ी देखी नूली देखो इनके हाथ पसारें

बीड़ी बाज की दशा देखकर मंगता ही भकमारें  
 घर में बीड़ी घोर में बीड़ी भाहें जाना बीड़ी

बीड़ी के बस गंगा पड़या जं कीचड़ में कीड़ी  
 बाओ पीवो मृगेनां कंयन बाकी राखो तमाखू पर टूट पड़ो  
 ज्यं भिन्टा पर माखो

भाहें जानां बीड़ी पीवो भूँओ धे उह काओ

धां के मरीगा मृगला म्दाने और नजर नहीं आवे  
 मांची यात कहू कं थाने भूटी एक न भाकं

ठीक यात न होश नहीं जाने वह भी पीवे तमाखू  
 हूँओ नो हूँ २ करं मरे चिलम नो हैं चंगी

तमाखू पर टूट पड़ा धे ज्यं भूटा पर भंगी

जो कोई धामण पीवे तमाखू उनको देवे दान  
 बामन गाव गंडूरो होसी नरक पड़े जजमान  
 धर्म और धन बिगड़सी और बिगड़सी काया  
 अकल बिगड़ रह जासी आदी जिनस में समझाया  
 एक बीड़ी के कारण से थे अपने जीव हरावो  
 दाँकणी में पानी लेकर दूधकी ले मर जावो  
 धे सायबजी जरदो खावो भारी मिलावो चूनो  
 बुझड़ो धारों ऐसु बांसे जाणे जाजूरो जूणों  
 इससे खोद्यो असर पड़े से छोरा ऊपर धाँको  
 अब तो बीड़ी और चिलम ने तोड़ फोड़ कर नाखा  
 हिंदू आर्य और जैन धर्म दुर कोर  
 तो भी नकटा पणा करके पडा तमाखू लारं  
 धाँसी खाँसी दमो होसी पटसी घणो खेग्वार  
 ऐसी तमाखू पीकर कन्धा फाई काढ़ोगा सार  
 मानो तो या सीख हमारी, नहीं मानो मरजी  
 ग्हे तो न्हारी तरफ से धाने साफ सुनायां अरजी  
 धाँको न्हाको घर नहीं न्यारो जिनसे क.हया धाने  
 जँच नीच कोई घात करी तो मांस करिजो न्हाने  
 तुको—डाढ़ी जले मूठ जले सिम्का और खून जले  
 लार जले हंछी जले धून के पान से  
 आँख और कान जले नाक और जबान जले  
 घाती और माथो जले नाड़ी पीच घंजा फंसे

हुक्के की मिरम से दंत की पा और होट जले  
हुक्का से शरा से हाथ जले जगत भूट खाने से

॥ गायन ॥

यहां के महल मंदिर और न विस्तर काम आएंगे ।  
ए मिष्टर पे मदर तेरे न फादर काम आएंगे ।

नहीं यहां काम आएंगे तेरे धंगले या फुलवारी  
नहीं यहां हीरा मोती और जवाहर काम आएंगे ।

हजारों दोस्त है तो क्या यहीं तक की मोहव्यन है  
की ब्रिटिश एम्पायर के न मैम्बर काम आएंगे ।

यहां पर लोक में नहीं काम आते जज या बैरिस्टर  
कजा के सामने बना न लीडर काम आएंगे ।

हुक कामों से मरांसर है मुलाकानें बहुत गहरी  
निवारण के यहां उनकी न छेटर काम आएंगे ।

मयारी बंठने की यहां पे केवल और ही होगी  
बलनी रेल साइकिल और न मोटर काम आएंगे ।

॥ गायन ॥

तर्ज-मुरख मन क्यों करना अभिमान

काल घली हल आन दबावे      छिन में लेवे प्राण ।

धन डौलत मय महल मालिया      कुछ भी न अपनो जान

संग संयन्धी जिम प्यारे मय ही सुख के जान ।

विपन पड़े कोई काम न आवे      मनलख के सय जान

जगह है मुमाफिर खाना      नृ सोया चादर तान



महा पुरुष अघनीत को भी हारे विपद्वा सारी ।  
 गोशाला की रक्षा कीन्हीं तापस तेजु निषारी ॥  
 महा पुरुष पाते हैं शान्ति पापचार संहारी ।  
 दूर करि या धामें प्रभू ने पशु हिंसा दुखहारी ॥  
 हृदय भयन से निकलेगी जय विषया सा सुखहारी ।  
 तब ही आत्मानन्द मिले यह बीर कथन दुखहारी ॥  
 बनो कर्म योगी कर सुकृत होयो पर उपकारी ।  
 पृथ्वी चन्द्र के बली बनकर प्रभू ने जनता सारी ॥

॥ गायन ॥

पुरुष पुरुष वाली हो जिय जीय की लगे जान उसी को  
 गापी जीय को जान लगे मिट्ट राज मिल जाये ।  
 बालु रज का गर न होय कुनकार गवि जाये ॥  
 मारा ममट मोटा न होय बालु से नही मेल ।  
 वह रज ईसे काम आगया हो मिट्टी के पैल ॥  
 इधु से मोटा रज गाय मुखा जाये मीन ।  
 बाबूक हृदय धमे आग ३ जानो गुरु समीप ॥  
 प्रदेवनी मदनी धर्मिक दुख भोग कृपक राजमाय ।  
 कल एक उरुदा मुखा न काट करम करमा ॥  
 जम्बू कृपक न एक बाय से लगी आये नार ।  
 बालुमय बर बीर तज के एक बाय है मार ॥





संगठन कच्चे घागे का होने से रस्सा बन जाता  
 अजि गज राज को छिन में देत वो बंध ठारी है ॥  
 संगठन प्रेम से निभता प्रेम को प्रथम अपनाओ  
 'अमृत' से बचन बर्पा कर उन्नति दे बधारी है ॥

॥ गायन ॥

( तर्ज— सुन्दर रहिजे महिलो भाय )

करलो मात पिता सेवा सुख बहुत पायना रे ।  
 जिससे मिलती शुभ आशीश विपद् नहीं आवना रे ।  
 करके लुट के तन का मोपन करते तान मात सुत पोष  
 उनका डरदा देते दोषण लज्जा लावना रे ।  
 मित्रों बड़ा नाम उपकार कैसे भूल सके इणवार  
 जिनके चरणों में हरवार कि शीश भुकावना रे ॥  
 आयन तीर्थ मृगी मोटा उनको दुख देने में टोटा  
 गोटा नजकर के अनिमान के विनय दिखावना रे ॥  
 मायन भक्ति धार बनाई उनको भूल सकों किम भाई  
 आई कल्प मृत्त में धान के ध्यान जमावनारें ॥  
 परा पुण्य बन्ध जो ब्रह्मा मायन सेवा रो जल छेसी  
 बांका अमर नाम जग रेमी 'अमृत' गावना रे ॥  
 भारत की सम्पत्ती गान अटो देखो इन जैन दुलारों ने  
 प्रताप सला जय देश नजि, यल भक्ति भामा शाह की  
 दानी कैसे होने बनलाया जैन दुलारों ने ।





असली दिवाना और है नकली दिवाना और है ॥  
 व्याख्यान सुन तल्लीन हो, मस्तक हिलाना और है ।  
 आत्म रस में मग्न हो आनन्द पाना और है  
 धर्म सेवा ज्ञान सेवा संघ सेवा ना करी ।  
 सुखिया कहाना और है सेवा बजाना और है ॥  
 आश्रय सर्वश का लें खँबने एक पक्ष को ।  
 सिद्धान्त पढ़ना और है पर रहस्य पाना और है ॥  
 गोतम य केशी की तरह संघ दल के नायक हैं ।  
 प्रतिष्ठा पाना और है कर्त्तव्य बजाना और है ॥  
 महावीर के सेवक हमों असली यों कहते हैं सभी ।  
 अनेकान्त कहना और है अने कान्ती यनना और है ॥  
 धर्म ध्यानी 'शुक्ल' ध्यानी यनना चाहने हैं सभी ।  
 विभाव ध्यान और है स्वभाव ध्याना और है ॥

### ॥ गायन ॥

करो प्रचार दुनिया में प्रभुका नाम लेकर  
 प्रसन्न चित हो धर्म त्वातिर जो अपने प्राण खोते हैं ।  
 बहुत कम ऐसे कोटो में मनुष्य पुण्य बान होते हैं ॥  
 बिलामिता पड़ी दुनिया चाहे सर्वस्व लुटा देवे ।  
 उदय जय दुम्ब कर्म आवें फेर नादान रोते हैं ॥  
 पडे मिथ्यात्व या एकान्त में, नर तन को खोते हैं ।  
 ममय अनमोल जाता है वे चादर तान सोते हैं ॥



हृषद सुता को कष्ट दिए अति दुर्योधन अज्ञानी ।  
 अन्याय किया प्रतिव्रता से तो कुल की हो गई हानि ॥  
 गज सुकमाल मुनि सिर उपर अंगोर रखानी ।  
 दान शील तप ग्रहण करे हो, अष्ट कर्म की हानि ॥  
 पूज्य गुरु सु प्रसाद पाय मनि 'शुक्ल' मुनि कहे बाणी ।  
 सोमल मर कर गया नरक में मुनि मोक्ष गति पामी ॥  
 खन्दक मुनी के शिष्य पाँच सो धानीसे पिल धानी ।  
 पालक मर कर गया दुर्गनि मुनि सिद्ध गति पामी ॥  
 रामचन्द्र को राजतिलक की हो रही थी बैठानी ।  
 कर्म बजाई ऐसी भेरी बन को दिए भिज धानी ॥  
 राज दुखारी चन्दन वाला मूला बुल्ल विरानी ।  
 पूरण अविग्रह किया धीर का निरा वाद सुल्ल धानी ॥

## ॥ सत धर्म ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—मुझे हैं काम ईश्वर से

मिथा जिन बाणी के दुनिया सभी धोके की दृष्टी है ।

प्रलोभन में किं प्रानी विषय तृष्णा की भट्टी है ॥

किं तल्लीन स्वार्थ में प्रेम मय रण में बदला

बिना सबज के बाकी धर्म धोके की दृष्टी है ॥

कोई ज्योतिषि कोई स्थाना कोई नंतर मंतर याद्री

लगा कोई हथ फेरी में सभी भद्रा पर चढ़ी है ॥

धर्म से मीचकर आगे पाप दिन रात करते हैं

और तो क्या यह सुन्दर तन भी होने वाला मिटी है ।



## ॥ निर्मल आत्मा की तर

॥ गायन ॥

तर्ज—हमें तो काम जिनवर से जगत्  
 अरूपी आत्मा मेरी को क्यों रूपी  
 मुक्त हूँ अष्ट कर्मों से उसी में फिर  
 अज्ञानत से अपने से भी मुझे नीच  
 कल्पना करके भगवन् की मेरी मनु  
 पिता हूँ विश्व भर का सिद्ध आत्मा  
 किसे फिर पालने में लोरियाँ देकर  
 सदी हो चाहे गर्मी हो मुझे  
 पहिनाते क्यों मुझे वस्त्र या क्यों  
 मैं शुद्धात्मा हूँ निर्मल हूँ बनो तुम भी  
 पड़े मिथ्या भ्रम में तुम किसे मल  
 बना हूँ निर्विकारी कामना मुझ में  
 पुष्प रस गायन वादितर भला  
 मैं निस्कर्मी नहों भूला मिष्ट कल  
 यथा छे नाम मेरा पाप क्यों निभ  
 धर्म करके जाल मिथ्या का  
 और रसानल  
 मेरा रक्षा





## ॥ निर्मल आत्मा की तरफ से ॥

॥ गाय ॥

॥ मैं लकी लो जल तिनपर ही गगन लड़े लो सदन लो ।

नली आत्मा ली लो लगी लगी लताले लो ।

लुल लु लल लली लो लली लो लल ललल लो ॥

लललल ल ललल लो ली लुल लील लल लल लो ।

ललल ललल ललल ली ली ललल ललल लो ॥

ललल ललल लल लो ललल आत्मा लो ल ललल लो ।

लल लल ललल लो लललल ललल ललल लो ॥

लल लो लल ललल लो लल ललल लल लल लो ।

लल ल लल लल लल लल लो लल लल लल लो ॥

ल लल लल लल लल लल लो लल लो लल लो ।

लल लल लल ल लल लल लल लल लल लल लो ।

ल ल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

ल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

ल ललल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

लल ल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

लल ल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।

लल लल ललल ललल लल लल लल लल लो ।

लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लो ।



मिळे तार जब निर्यल आकर जनना सह ग करे सब पा  
व्यापारिक सुख का—प्रेम की...

प्रेम बिना कुंठ नहीं यही है फिर सुर पुर या मोक्ष का  
'सुखस' ध्यान शुभ धार—प्रेम की...

## ॥ जैनियों ॥

॥ गायन ॥

नर्ज १-ज्ञान भारत के लिए अरु प्राण भारत के लिए  
जैनियों अब धर्म रक्षा के लिए तैयार हो ।

लाज हीरे छुट गए अब नींद से बेदार हो ॥

साम्प्रदायों ने टान रखी है मित्राने की तुम्हे ।

बसाद आलस में मगर तुम लीन हो सर सार हो ।

नष्ट साधना हो गये सामान के संगो इलाज ॥

कर्म धर्म छान्द बनां सबी क्यों इस कदर बेदार हो ॥

बाह रक्षा संसार मर्यादा मार्ग बननाचे कोई ।

इसलिए मर्यादा धर्म का संसार में प्रचार हो ॥

निम्न श्रुति का अनादि जैन का मुख्य धर्म है ।

प्राण सागर में दुखी जीवों का निम्न उद्धार हो ॥

मर्यादा की जाति हो संसार निम्न संज्ञान में ॥

अन्याय कायदे का नृपतारी आस्था नम्रवार हो ॥

आपत्तिपूर्ण बाह रक्षा की मर्यादा आवे सामने ।

॥ निम्न व्याख्या हो ॥

विशाल हृदय हो आपका देश धर्म सेवा के लिए ।  
 सर्वस्व लाने पर खुशी हो इस तरह का प्यार हो ॥  
 फूट का मुंह काला करके साफ हृदय से रहो ।  
 त्याग अवगुण का करो सद् ज्ञान हृदय संचार हो ॥  
 ध्यान शुभ धर्म अपना आत्म तारण के लिए ।  
 'शुक्त' छेरया ध्यान से ही जन समूह भवपार हो ॥

## ॥ आत्म शक्ति ॥

॥ गायन ॥

बलों में आत्मिक बल धार  
 आत्मिक बल का जिस घड़ी होत हृदय संचार ।  
 तन बल धन बल अरु पशुबल होत तुरंत फरार ।  
 सिंह को देख के जैसे स्वार ॥  
 पालक यजीर से यूँ कर रहा खंदक मुनि पुकार ।  
 तेरा बल यह सर्व तेज हैं ओ जालिम पदकार ।  
 रुलेगा तू अनंत संसार ॥  
 करले मन माने सितम तू भी दिन दो चार ।  
 रोना होगा तुझ और नृप को पड़े जमों की मार ।  
 पाप की नाँव न होगी पार ॥  
 दस कंधर तू हैं पली जाने सय संसार ।  
 मैं भी दासी थी राम की सीता अयला नार ।  
 परे हट ओ पापी मझार ॥  
 मेरे बल के सामने यह तेरी तलवार ।

क्या मजाल जो कर सके मेरा बांका बाल ।  
 यताता क्या धमकी दरवार ॥  
 जहाँ धर्म तहाँ है विजय जहाँ अधर्म तहाँ हार ।  
 कहीं दुर्योधन की शक्ति कहीं द्रोपदी चीर गज चार ।  
 मान का अंतिम खाना खवार ॥  
 धीर सिकन्दर योद्धा था एक धूनानी खूंखार ।  
 उसने आकर पराजय पाई चन्द्रगुप्त नृप हार ।  
 भुका चरणों में फेंक हथियार ॥  
 धर्म धीर डरते नहीं मरने से जिनहार ।  
 जैसे मुनि खंदक चले धर्म वीर अवतार ।  
 क्षमा से पाया मोक्ष द्वार ॥  
 गज सुकुमाल ने अग्नि धराई सिर रमशान मंभार ।  
 मोमल पापी पाप कमा गया चौथी नरक द्वार ।  
 जीव को करता द्वंश खवार ॥  
 नामा शाहने गिरता गिरता राणा लिया उभार ।  
 देश धर्म इज्जत को रखा 'शुक्र' मन्त्री कुछ धार ।  
 धर्म से जीता शास्त्रानुसार ॥

## ॥ कर्त्तव्य पालन ॥

॥ गायन ॥

नर्तक :—प्राण भारत के लिए

कर्त्तव्य पालन ना किया मनुष्य जन पाया तो क्या ।

दुख न दुखियों का दरा संसार में आया तो क्या ।



सगुडाल निर्यठा कुण्डकोलिया रसिक जिन घानी का ।  
 आर्द्र कुमार सम मिथ्यामान, मसलो अज्ञानी का ॥सुमर॥  
 मंदक गजसुकुमाल धर्म रुचि अर्जुन माली का ।  
 प्रवृत्ति त्याग निवृत्ति है मंत्र मोक्ष निशानी का ॥सुमर॥  
 काम देव अरणक सुदर्शन दृढ़ श्रद्धानी का ।  
 सम्यक् शुद्ध धनधार भ्रम तज अनित्य जवानी का ॥सुमर॥  
 दुनिया दू भूटी जाल मयंकर हैं मिजमानी का ।  
 ले धर्म कमाई छार नहीं घर आगे नानी का ॥सुमर॥  
 ग्यभाव में कर संतोष आसरा छोड़ बिरानी का ।  
 धर्म 'शुक्ल' शुभ ध्यान मद्रा होता ब्रह्मजानी का ॥सुमर॥

## ॥ जैनियो जागो ॥

॥ गायन ॥

नरै—पाप का परिणाम प्राणी मोगने संसार में ।  
 यत्न करने का नहीं कुछ कर दियाओ जैनियो,  
 मंग की चिन्ता दृढ़ शक्ति बढ़ाओ जैनियो ॥  
 आचार्य और मन्त्रिणि वाचस्पति व दियाकरों,  
 कर्त्तव्य पथ पर नाम अपना मन मज्जाओ जैनियो ॥  
 अभिमान धर्म को छोड़कर प्रभु वीर का मार्ग लणो,  
 गिर दृष्टि को प्रेम से हृदय लगाओ जैनियो ॥  
 जो रहे हैं युवक श्रद्धा गन्तार लम्बकर आपकी,  
 मंग की पहनी दृढ़ चिन्ता बढ़ाओ जैनियो ॥  
 छोड़ दो जिम्मे कहानी शाल कीपाई वृथा.

वीर वाणी ज्ञान का प्रवाह बहाओ जैनियो ॥  
 निन्दा व चुगली में हुआ सब हाश आत्म शक्ति का,  
 संग्रह करो चित्त वृत्तियां मगमें लगावो जैनियो ॥  
 अपने अपने शास्त्र का प्रचार दुनिया कर रही,  
 तुम अपने व्याख्यानो को मत मिश्रण बनाओ जैनियो ॥  
 तत्व का व्याख्यान हो मिथ्यात्व हरने के लिए,  
 दुनियां को खुश करने में मत शक्ति गमाओ जैनियो ॥  
 भाव निक्षेप व शुद्ध नय की तरफ आगे बढ़ो,  
 आत्म विकास के प्रेम की उर्मी लहरावो जैनियो ॥  
 'शुक्ल' शुभ दो ध्यानो का अभ्यास नित करते रहो,  
 पर गुण में रमना छोड़ निज गुण में समापो जैनियो ॥

## ॥ कर्म दशा ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है ।  
 शुभा शुभ कर्म प्राणी को हंसाता भी रुलाता भी  
 गति हो जैसे पागल की सुलाता भी बचाता भी  
 बनाता शाहों का भी शाह करे दर दर का याचक भी  
 राज ऐश्वर्य प्राणी को दिलाता भी छिनता भी ॥  
 खुशीमें घज रही नौबत सभी मंगल मयी गाने  
 कर्म चक्कर बदल उल्टा रुआता भी पिटाता भी  
 परिवर्तन शील हैं दुनिया चाहे परिक्षा करो सोसो  
 समय का चक्र में ऐसा गिराता भी उठाता भी ॥



सदा ना एक रस कोई गतागत में कहीं देखा  
 क्यों कि है नियम कर्मों का छुड़ाता भी फंसाता भी  
 जलाशय भरने हरियाली कही जीवन है फूलों का  
 खिजां करता समय गुलशन खिलाता भी सुखातं भी ॥  
 ध्यान है चार दुनिया में शुभा शुभ वीर करमाया ।  
 'सुफल' ये आत्म का गुण बताता भी छिपाता भी ॥

॥ गायन ॥

शिक्षा दे रही जी हमको जिन बाणी अति प्यारी ॥  
 अन्त काल से भटकत २ आर्य क्षेत्र मफारी ।  
 पुण्य योग मानव भव मिलिया अब करछे तैयारी ॥  
 पल पल आयु जाती छिन में उमर घटे छे थारी ।  
 चंचल होनो चेत छे प्राणी नहीं तो होगी खारी ॥  
 हाद हवेली बाग बगीचा सभी धरी रह सारी ।  
 अन्न समग्र दानों की चंपा काटी छेगा थारी ॥  
 कुटुम्ब कम्पीला नाना नानी स्वाधे की महतारी ।  
 घर की नारी प्राण से प्यारी प्रीति छोड़ उस थारी ॥  
 आनंद मोघ मोछे क्षिण मात्र सुखो नहीं ससारी ।  
 जन्म मरण का दुख अनन्ना कहत शास्त्र पुकारी ॥  
 चार कौम जावे भाई बाधे खरबी लारी ।  
 पर भय जाना नुभको चेतन हमकी करो तैयारी ॥  
 करना हो मो करछे प्यार काल चन्द्र कर स्यारी ।  
 ये नहीं छोड़ें नुभको प्यार भयके से छे जारी ॥



प्राण जाँय पण धर्म न छोड़ूँ, मैं हूँ जनक दुलारी ॥३॥  
 कुन्ती ने सुत भीम सेन को आज्ञा देई करारी ।  
 ब्राह्मण के बदले में जाकर, पूरण कर बकवारी ॥३॥  
 दुस्साशन ने सभा भवन में पट खींचा की खवारी ।  
 पर द्रौपदी ने चीर बढ़ाया अपना सत्य संभारी ॥४॥  
 सिद्धिका ने अयोधुर की भारी विपदा डारी ।  
 दिग्वल्लभा रण कौशल ऐसा भागे घोधा हारी ॥४॥  
 सत्यवती चन्दन बाला की धारणी प्रिय महतारी ।  
 अपना सत्य राखन को दखो मर गई श्राप कटारी ॥५॥  
 जोहर बाई और पद्मावती गढ़ विस्तार मझारी ।  
 जोहर ग्रन्थ दिखला के कर गई भारत में बेदारी ॥५॥  
 दुर्गा और लक्ष्मी ने रण में कभी न हिम्मत हारी ।  
 मातृभूमि की स्वानि आगिर कर गई जान निशारी ॥६॥  
 जब भी ऐसी बहिनें यहाँ पर मय थी इज्जत भारी ।  
 जब से बहिनें मग से बिछड़ी हवा पिगड़ गई सारी ॥६॥  
 बहिनो अब फिर उठो मम्मल कर निजादर्रा विचारी  
 'अमर' हिंदू को मय देगा का करदो सत्ता धारी ॥७॥

॥ गायन ॥

देर—बहनो ! मान लो गी अब सो मेरा कहना ।

दुःख भाव कर दूर हमेशा मिलजुल करके रहना

गर कोई गाली बी देवे तो मुँह हो करके सहना ॥१॥



तात घात सम तुल्यहृ नर से करिए घात विचारी ।  
टोप हक नाक खुबारी ॥

घिन कारण घर पर जाकरके कीजे न थारी म्हारी ।  
पर धन, सुत, गृह, पट भूषण ललि करिए ना ईर म्हारी ।  
गहो रसतोष पिटारी ॥

पति परदेश गयो पद्मिनी को तजयो सरस अहारी ।  
पट भूषण नूतन न पहिरया तीज त्यौहार विनारी ।  
न जाओ धाग भंकारी ॥

॥ गायन ॥

तर्ज-गोरख ईश्वर जी कहवे तो ।

प्यारी ! कर पति घत से प्रीति के जीवन पावना ए ।  
सुन्दर ! मिनख जमारो बार २ नहीं पावना ए ॥टेरा॥

कका, कर्षाप ओहिज धारो,  
खवा, खल इन्हीं पर सारो,  
गगा, गफलत मे मन हारो,

घघा, घट उजियारो पतिव्रत नेम निमावणा ए ॥

चचा, चित्त चंचल वश कीजे,  
छछा, छल छिदर तज दीजे,  
जजा, जश लियां जग जीजे,

झझा, झूठो संसार एक दिन जावणा ए ॥

टटा, टंक निमाओ भारी,  
ठठा, ठीक सलाह है म्हारी,



॥ गायन ॥

तर्ज - होली काफ़ी ।

देर—पालो पतिग्रन भर्म प्यारी सुनो सुहागिन नारी ।

गुण सम्पति जो चाहे जगत में रहो पनि आशाकारी  
सागु स्वमुर और ननद जेदानी उनकी सेवा करो ।  
मानो मन मीन हमारी ॥

पनि आशा जो करे उलंघन है वो कुलटा नारी ।  
उनके साथ धान करने में लागे लाछन भारी ।  
जिहयो यह नीति मकारी ॥

पनि, जो आशा देंगे मुमको छेयो यह निर धारी ।  
गीत को समझो सब गुण जाना जोसा गुन भण्डार  
कहे यो धुनियाँ सारी ॥

जील मरुती मोचो कैसी भी यह सीना नारी ।  
पतिग्रन रामे रामे पहिचानो नत्र दिग मरुत अदारी ।  
बली बन जनक दमारी ॥

विद्या १२ सुगुणना मेरो छेयो ज्ञान विचारी ।  
कैसा पतिग्रन दहा नीति में उनकी गृध लो सारी ।  
बना विदुषि सब नारी

नैनमल दूधला दुधल सुनो सुगुणन नारी ।  
जाना जग १२ उसे न मरे दो दुख हो कैसा ही सारी ।  
मरो बाद न प बगारी





कहे तुमको सभी सज्जन यह लड़की धर्म धारी है ॥  
 यदि तुम चाहो गाने को तो गाओ पर्य कल्याणक ।  
 कहे सब हर्ष लाकर के देखो यह नारी है ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—नर भय निकमों जाय ।

देर-लंसी पतिव्रता नार मिली पुरुष पुण्य दान को ॥  
 पंखो दोरी अन्न जिमाये ममज्ञे विगू भगवान को ।  
 दासी समान हुक्म उठाये पोछे मिष्ट जमान को ॥  
 मायू मगूर का मान विना ज्यों माने यह करमान को ।  
 लाजा नछता बल्ल धान ज्यों समझे पर हुम्मान को ॥  
 कुलोद्धारिणी वृत्त बर्षक यही पर भगांर कुलदान को ।  
 मय्य मलाह दक समझावे लाल और नृपमान को ॥  
 विपत्ति में मलाह दक पति को दवे साथ धर्म ध्यान को ।  
 रति भूक अति लया दान हा आदर करे महमान को ॥  
 दब गुरु का भक्ति कर हे अंगाय कर निज ज्ञान को ।  
 गुह दसाद आवस्य कर समय सिखा कथान को ॥

। ११०

११०

मिष्ट दान ११० वृत्त भूक अति लया दान हा आदर करे महमान को ॥  
 रति भूक अति लया दान हा आदर करे महमान को ।  
 हुक्म उठाये पोछे मिष्ट जमान को ॥  
 दासी समान हुक्म उठाये पोछे मिष्ट जमान को ।  
 मायू मगूर का मान विना ज्यों माने यह करमान को ॥  
 लाजा नछता बल्ल धान ज्यों समझे पर हुम्मान को ॥  
 कुलोद्धारिणी वृत्त बर्षक यही पर भगांर कुलदान को ॥



॥ गायने ॥

शस्त्रे—रमिया नहीन ।

मैं अंगरेजी पढ़ गई पालम खाना नहीं पकाऊंगी ॥  
 मैं अंगरेजी पढ़ कर आई मर्टीफिकेट थो० ए० का लार्  
 डिग्री उर्दू पढ़ी नहीं अब नाक कटाऊंगी ॥  
 डाल भाला रोटी का खाना ये मेरे मन ने नहीं माना ।  
 मोटा विष्कृत लेमलेट फिर खाह उड़ाऊंगी ॥  
 मैं नहीं पुराने को मिलगाऊं कुंठ कर नहीं लौल फुकाऊ  
 रत्न के दो सपने उन्हीं से टकल कराऊंगी ॥  
 दूध तट और म्यूसर माग्य मुझे देल सप हारे लौग्य  
 भयना दिग्गज ५१२ अटलदा मैं हो जाऊंगी ॥  
 एक साल दिग्गज ॥ अटल अपने बंगले आए पिनाये ।  
 सन दुसरे का बाल सन मैं मोत उड़ाऊंगी ॥

॥ १० ॥

• • • • •

ସମସ୍ତ ଶୁଭା ଲା ଗର୍ଭା ଗ ୦

[illegible]

॥ ई नमः कृष्णाय नमः कृष्णाय नमः ।

१. ब्रह्मा-सर्व-सत्-स्युक्तं ब्रह्म ब्रह्मसिद्धिर्ब्रह्मा ॥

१५ मं. - १ दी १०१ मं. मन्त्र वृत्त विज्ञान ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਅੰਕ ੨ ਦੇ ੧੯ ੧/੨ ੧੦ ਮਤਰਾ ਦੇ ਸਾਥੀ ।

[illegible]



॥ गायन ॥

तर्ज—रसिया नवीन ।

पहनों बरत्र स्वदेशी चहनों । कहनों मानों हमारो ए ।  
 खादी के कपड़े तन धारो, जिन से होसी भलो तुम्हारो ।  
 प्यारो भारत देश इसे अब मति विसारो ए ॥  
 काम हाथ से सूत सहेली खादी बनवावो अलबेली ।  
 पहिले की मर्यादा सबी जिसे नहीं बिमारो ए ॥  
 भीणा कपड़ा तन पर धारो दिखे मारो बदल उधारो ।  
 निर्लज दो पोषाक त्याग नन लज्जा धारो ए ॥  
 भीणा कपड़ा से सुन प्यारी गीत घाम नहीं बचे करारी  
 उनकी रक्षा करो वस्त्र मोटे तन धारो ए ॥  
 धर्म अहिंसा यहिन तुम्हारो चर्च के कपड़े नन धारो ।  
 कैसे होसी भलो यहिन दिल बीच विचारो ए ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—नवदा यंगे तो पड़जा ।

मकर म्हाने चर्चा मंगवादो ० कानां भीणो लून  
 जिनकी म्हाने रंजी मंगवादो ॥

गण ० रटियो किरं—चाले अनोखी बाक ।  
 नाकर चाकर शाही मयकी, धरी गह गई धाक ॥  
 भाग्य देश दुनिया नक को, माथा को मिरमोड़ ।  
 आज मभी जगद हमी देश को मिल रही हैं होड़पे होड़  
 मय देशों ने पालना भर बनिया आज आजाद ।  
 घर की खादी पहनन लाग्या होगया अब सादा साद ॥



॥ गायन ॥

तर्ज-सीता माता की गोद में हनुमन डाली चूंदड़ी,  
ओढ़ो २ ए अयि प्यारी ! पतिव्रत धर्म की चूंदड़ी ।  
ओढ़ो २ ए सुहागिन । शील सुरंगी चूंदड़ी ॥

मन मलमल देसी मंगाओ  
जिनको ज्ञान गुलाबी रंगाओ  
उन पर गुण गोटा चढ़ाओ

ऊपर विनय बेल बनवालो चम चम चमके चूंदड़ी ॥

सुरमो शरमाई को सारो  
मिस्सी मीटें बचन उचारो  
चिन्दी पनि प्रेम की धारो

नथ नो पनि नाम की राखो जगन लखी है चूंदड़ी ॥

मृद्धी चनुराई की पहरो  
कंकण जान तणो है नेरो  
दोला भंड बचर ने केरो

प्यार धार हर्ष को हार के हरदम ओपे चूंदड़ी ॥

माढ़ी शील धर्म की पहिनो  
कथजो मन कथजे कर लेनो  
लहेगो लम्हनाई को पहिना

धारो प्यारी गसे बंज के चोखी लागे चूंदड़ी ॥

भास स्वमुख की सेवा कीजे  
घर को काम शिघ्र कर लीजे





- ५० पचाम फुटरी लागे संसार की आस ।  
 ६० साठ शरीर होग्यो काठ ।  
 ७० सत्तर उकचुक होग्या नखतर ।  
 ८० अस्सी अचे जीवे तो धारी खुशी ।  
 ९० नब्बे अचे जीवे तो दुनिया हब्बे ।  
 १०० एके उपर मिट्टी दो अचे दुनिया में निर्भय सौ ।

॥ गायन ॥

तर्ज—धंशरिया कहां भूल आये...

धर्म मय भूल गये कैसे दिन आये ।

मत्स्य के उपर तारा रानी बीच बाजार बिकाये ।

आजकल की नारी पति पर अपना हुक्म चलाये ॥१॥

प्रातः काल उठ मान पिता को रामचन्द्र सिर नवाये ।

आजकल के बेटा देवो छे जूना धमकाये ॥२॥

गया मुद्रशीन वीर बंदवा माली मय बिसराये ।

अब नो धान ही धान में धर्म छोड़ते जाये ॥३॥

गज सुकमाल मही मिर अग्नि खन्दक कष्ट उठाये ।

आज परिपह आने पर मुनियां का जी घबराये ॥४॥

बभ्रू भजन मन्संग छोड अब नित्य सिनेमा जाये ।

चौधमल कहे चार साल धर्म किया सुन्न पाये ॥५॥



## ॥ शुभा शुभ भाग्यके फल ॥

एक शृंगार करे नित नूतन, एक भरे घर ही घर पानी ।  
एक तो सौंझ या दासी कहायन, एक कहायन है ठकुरानी ॥१॥

एक तो पाद पिताम्बर ओढ़त, एकन को है चिन्ही पुरानी ।  
साथ नुके कल देखावे दिनर, तोही न चैनन है सटप्रानी ॥२॥

## ॥ पुण्य की मुरी ॥

शुभम कहायन हाथीन के घर ।

हा हा है मुख पाद सटाई ।

नर जीव नमानन आयन है ।

यह पाद दम की दण्ड पनाई ॥

इय विहायन गद्य प्रादिका ।

न मन की विनी मनेम टणाई ।

मान विचार कह इति जीमर ।

नय विद्या यह जीवम आई ।

— \* समाप्त \* —

